अमृत रस बाणी
श्री गुरु रविदास जी

स्टीक {हिन्दी}

व्याख्याता : चरनजीत सिंह बिनपालके
मो. 098148-39944

अगर कोई सभा या व्यक्ति इस स्टीक को नि:शुल्क या लागत मूल्य पर वितरण के लिए अपने नाम पर छपवाना चाहते हैं तो कृप्या संस्था के साथ संपर्क करें और यदि कोई हिन्दी, पंजाबी भाषा के अतिरिक्त किसी अन्य भाषा में छपवाना चाहता है तो संस्था उनकी आर्थिक सहायता कर सकती है।

प्रकाशक :
श्री गुरु रविदास मिशन प्रचार संस्था पंजाब (रजि:)
गांव : बिनपालके, निकट भोगपुर, ज़िला जालन्धर-144201

Amrit Ras Bani

Sri Guru Ravidass Ji
Satik {Hindi}

Explaination by :

Charanjit Singh Binpalke

Translator : Master Ramdhan Nanglu

द्वितीय संस्करण 1 जनवरी, 2019 (संख्या = 2000)

भेटा = 20 रुपये
भेटा = 10 रुपये (केवल नि:शुल्क वितरण हेतु)

प्रकाशक -
श्री गुरु रविदास मिशन प्रचार संस्था पंजाब (रजि:)
गांव बिनपालके, निकट भोगपुर, ज़िला जालन्धर - 144201
मो. 098154-85844, 098725-88620

डिज़ाईनिंग :
वालिया कम्प्यूटर, जालंधर
098153-78692

सूची पत्र

क्र.नं.	विवरण	पृष्ठ
*	मुख्य बन्ध	6
*	अमृत रस बाणी के प्रति विनय	8
*	जीवन श्री गुरु रविदास जी	11
*	विचारधारा श्री गुरु रविदास जी	12
	1. रागु सिरी रागु	
1.	तोही मोही मोही तोही अंतर कैसा...	15
	2. रागु गाउड़ी	
2.	मेरी संगति पोच सोच दिनु राती...	15
3.	बेग़मपुरा सहर को नाउ...	16
4.	घट अवघट डूगर घणा...	17
5.	कूप भरिओ जैसे दादिरा...	18
6.	सतजुगि सतु तेता जगी दुआपरि पूजाचार...	18
	3. रागु आसा	
7.	मृग मीन भ्रृंग पतंग कुंचर	20
8.	संत तुझी तनु संगति प्रान...	21
9.	तुम चन्दन हम इरंड बापुरे	21
10.	कहा भइओ जउ तनु भइओ छिनु छिनु...	22
11.	हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरे...	23
12.	माटी को पुतरा कैसे नचतु है...	23
	4. रागु गूजरी	

13.	दूधु त बछरै थनहु बिटारिओ...	24
	5. रागु सोरिठ	
14.	जब हम होते तब तू नाही...	25
15.	जओ हम बांधे मोह फास...	26
16.	दुलभ जनमु पुन्न फल पाइओ...	27
17.	सुख सागरू सुरतर चिंतामनि...	28
18.	जउ तुम गिरिवर त्यो हम मोरा...	28
19.	जल की भीति पवन का थंम्भा...	29
20.	चमरटा गांठि ना जनई...	30
	6. रागु धनासरी	
21.	हम सरि दीनु दइआल ना तुम सरि...	31
22.	चित सिमरनु करउ नैन अविलोकनो...	31
23.	नामु तेरो आरती मजनु मुरारे...	32
	7. रागु जैतसरी	
24.	नाथ कछूअ ना जानउ...	33
	8. रागु सूही	
25.	सह की सार सुहागनि जानै...	34
26.	जो दिन आवहि सो दिन जाही...	35
27.	ऊचे मंदर साल रसोई...	36
	9. रागु बिलावलु	
28.	दारिदु देखि सभ को हसै...	37
29.	जिह कुल साधु बैसनो होइ।।	37

	10. रागु गोंड	
30.	मुकंद मुकंद जपहु संसार।।	38
31.	जे ओहु अठसठि तीर्थ न्हावै।।	39
	11. रागु रामकली	
32.	पड़ीऐ गुनीऐ नामु सभु सुनीऐ...	40
	12. रागु मारू	
33.	ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै...	41
34.	सुख सागर सुरितरु चिंतामनि...	42
	13. रागु केदारा	
35.	खटु करम कुल संजुगतु है...	42
	14. रागु भैरउ	
36.	बिनु देखे उपजै नही आसा...	43
	15. रागु बसंतु	
37.	तुझहि सुझंता कछू नाहि...	44
	16. रागु मलार	
38.	नागर जनां मेरी जाति बिखिआत चंमारं...	45
39.	हरि जपत तेऊ जना पदम कवलास पति...	46
40.	मिलत पिआरो प्रान नाथु...	47
*	**सलोक**	48
*	शब्दों की व्याख्या (स्टीक)	49

मुख्य बन्ध

इस कायनात में अनगिणत सूरज, चांद, सितारे मौजूद हैं। ग्यारह अरब के करीब तो गलैकसीज़ (Galaxy) मौजूद हैं। जहां तक हमारे सूर्य मंडल का तालुक है, इस में छोटे-छोटे ग्रह तो ज्यादा हैं मगर दस (10) ग्रह बहुत बड़े हैं। इन ग्रहों में धरती का अपना एक खास मुकाम है। इन में तीन लोक में जीवन मौजूद है जो पाँच तत्वों की वजह से कायम है। धरती पर दो सौ (200) के करीब यू.एन.ओ. (U.N.O.) के देश हैं और इन के इलावा और भी कई छोटे-छोटे देश हैं। इन देशों में भारत एक ऐसा देश है जिस की अपनी सभ्यता (Civilization) है। वैसे तो इस कायनात में हर बड़ी चीज़ छोटी को दबाती है लेकिन हमारे देश में पंद्रह (15) प्रतिशत लोगों ने पच्चासी (85) लोगों को सदियों से दबा कर रखा हुआ है। भारत देश एक बहुत बड़ा देश है। इस में उन्नतीस (29) रियासतें (States) और छह केंद्र शासित प्रदेश हैं जिन में पांच सौ इकानवे (591) ज़िले, पचपन सौ (5500) तहसीलें (Tehsils) और छह लाख (6,00,000) गांव हैं। इन में बहुत सी जातियां (Castes) और नसलों के लोग बसते हैं। इन में चमार जाति बड़ी प्रसिद्ध है जो देश और दुनिया के कोने-कोने में आबाद है। इस में एक बड़ी शख्शीयत का जन्म कांशी बनारस (यू.पी.) में हुआ जिनको जगत गुरु रविदास के नाम से जाना जाता है। इन का जन्म उस समय हुआ जब आदि-वासियों पर बड़ा जुल्म होता था और छूआछात ज़ोरों पर थी। गुरु महाराज ने जुल्मों का मुकाबला भी किया और बेहतरीन बाणी भी कलमबंद की। इस बाणी को सब से पहले **गुरु अर्जुन देव जी महाराज**

ने **आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी** में दर्ज किया। यह **गुरु अर्जुन देव जी महाराज** का बहुत महान कार्य था। आज तमाम देश के पढ़े-लिखे और समझदार चमारों ने इस बाणी को इकट्ठा करना शुरु कर दिया। इस वक्त नौ सौ (900) के करीब गुरु महाराज जी की बाणी के ग्रंथ मौजूद हैं। देश के लगभग सभी राज्यों में गुरु महाराज जी के नाम पर आश्रम चल रहे हैं जो दिन-रात गुरु महाराज की बाणी का प्रचार कर रहे हैं। पंजाब राज्य ने गुरु महाराज की बाणी के प्रचार को दुनियां के कोने-कोने में पहुंचा दिया है। पंजाब के जालन्धर के पास भोगपुर नाम का कस्बा मौजूद है। इस कस्बा के पास बिनपालके नाम का एक गांव है। इस गांव में श्री गुरु रविदास मिशन प्रचार संस्था पंजाब (रजि:) के नाम से चल रही है। संस्था के मैंबर दिन-रात अपनी अनथक कोशिशों से गुरु महाराज की बाणी का प्रचार कर रहे हैं। मुझे खुशी हो रही है कि पहले संस्था के प्रधान मास्टर राम धन नांगलू ने गुरु महाराज जी के चालीस (40) शब्दों तथा 1 सलोक का गुटका साहिब (स्टीक) पेश किया था और अब संस्था के सचिव श्री चरनजीत सिंह जी ने इन्हीं शब्दों का और संक्षेप में ''**अमृत रस बाणी श्री गुरु रविदास जी स्टीक**'' के नाम से पाठकों के लिए दूसरा गुटका साहिब (स्टीक) हिन्दी और पंजाबी में लिखा है। मेरी संस्था के इस सेवा कार्य के लिए शुभ इच्छायें हैं और मैं प्रभु-परमात्मा और गुरु रविदास जी से प्रार्थना करता हूँ कि वे इन सेवकों को अपने मिशन (उद्देश्य) में सफल होने का आशीर्वाद दें।

शुभ चिन्तक

01 जनवरी, 2019 **बिशन सिंह 'परवाना'**
सेवा निवृत प्रिंसीपल, कुंजवानी चौंक, जम्मू (जम्मू-कश्मीर राज्य)
मोबाईल : 094196-17608

अमृत रस बाणी के प्रति विनय

आप के हाथों में प्रस्तुत 'अमृत रस बाणी श्री गुरु रविदास जी' स्टीक (हिन्दी) के 'आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' में से लिए गए 40 शब्द और एक सलोक की संक्षेप रूप में व्याख्या की गई है। पहले संपूर्ण बाणी दी गई है, उस के उपरांत शब्दों के क्रम अनुसार एक-एक शब्द की संक्षेप व्याख्या दी गई है।

बाणी पढ़ने की विधि – गुरु जी की बाणी में जहां कहीं भी विश्राम आता है वहां थोड़ा, अधिक रिक्त स्थान दिया गया है। पाठकों से विनय है कि जहां-जहां भी अधिक रिक्त स्थान आता है और जहां पंक्ति समाप्त होती है वहां थोड़ा रुक-रुक कर पाठ करें तांकि बाणी का शुद्धि उच्चारण हो सके और बाणी पढ़ने-सुनने वालों को समझ आ सके।

गुटके की संभाल और नितनेम – इस गुटके को साफ और सुन्दर कपड़े में लपेट कर, गुटका पढ़ने वाली पीढ़ी पर सज़ा कर, किसी ऊँचे और साफ़ स्थान पर रखें। प्रातः अमृत समय स्नान करके या हाथ-मुँह धोकर इस पावन बाणी में से ऊंची ध्वनि में शब्द पढ़ो। अपनी श्रद्धा और समय अनुसार शब्द पाँच, ग्यारह, इक्कीस या पूरे शब्द ही पढ़े जा सकते हैं। शब्द पढ़ने के उपरान्त सत्यनाम का स्मरण करो और फिर प्रार्थना करो। सायं को भी इसी प्रकार करो। यह नितनेम प्रति दिन नियत समय पर ही करो।

इस गुटका साहिब में अपनी संस्था, गांव या गुरु घर का इतिहास छपवाएं – यदि आप यह गुटका साहिब संगतों में निःशुल्क वितरण करना चाहते हो तो हमारे पास से 8 रु. के हिसाब से मिल सकता है। इस में आप के नगर के गुरु घर का चित्र और जानकारी, गांव या आपकी संस्था की जानकारी और गतिविधियां प्रकाशित की जा सकती हैं। आप घर पर बैठे ही 50 रुपये में तीन गुटका साहिब मंगवा सकते हो। इस के लिए आप संस्था के **मोबाईल नंबर 098154-85844** पर संपर्क कर सकते हो।

क्षमा याचना

इस अगम्य, महान बाणी की व्याख्या करते हुए हम से अनेक त्रुटियाँ रह गई होंगी। हम श्री गुरु रविदास जी तथा आप सब संगत से क्षमा चाहते हैं। वैसे ये अर्थ संकेत मात्र ही हैं। अपने अमूल्य सुझाव लिख कर भेजने की कृपा करें। जिनको हम आने वाले प्रकाशन में शामिल करने की कोशिश करेंगे। हम आप के तह दिल से आभारी होंगे।

जय गुरुदेव! धन गुरुदेव!

गुरु पंथ का दास
चरनजीत सिंह बिनपालके
मोबाईल नं. – 098148-39944

संस्था को सहयोग की प्रार्थना

श्री गुरु रविदास जी के मिशन प्रचार के लिए किए जाते सभी कार्य संस्था के सदस्यों द्वारा वार्षिक चंदे, कौमी दर्दमंदों और गुरु मिशन प्रेमियों के सहयोग से ही निपटाए जाते हैं। संस्था के बहुत से ऐसे कार्य अभी अधूरे पड़े हैं। सो आप सभी को पुरज़ोर प्रार्थना है कि संस्था को अधिक से अधिक आर्थिक सहायता दें तांकि श्री गुरु रविदास जी के मिशन को जन-जन तक पहुंचाया जा सके। इसलिए आप मनीआर्डर, चैक, बैंक ड्राफ्ट या संस्था के बैंक अकाऊंट में सीधा ही सेवा शुल्क दे सकते हो। संस्था के बैंक अकाऊंट संबंधी विवरण इस प्रकार है -

SRI GURU RAVIDASS

MISSION PARCHAR SANSTHA

PUNJAB (REGD.)

V.P.O. Binpalke, Via Bhogpur, Distt Jalandhar

ACCOUNT NO. 32717505525

IFS. CODE NO. SBIN 0010122

CIF NO. 86549122040

STATE BANK OF INDIA

Bhogpur, Distt. JALANDHAR (PUNJAB)

जीवन श्री गुरु रविदास जी

श्री गुरु रविदास जी के आगमन से पूर्व भारत के लोग ऊंच-नीच, जाति-पाति आदि अनेक प्रकार की मिथ्या शंकाओं व भ्रमों, अंधविश्वासों और व्यर्थ के धार्मिक कर्मकांडों में फंसे हुए थे। लोग धार्मिक आडम्बर तो बहुत करते परन्तु इस जन समूह को उत्पन्न करने वाले प्रभु की पूजा का कहीं भी संकेत ना होता। गुरु रविदास जी ने इस संसार में आकर इस अंधविश्वासी और आधारहीन पूजा के स्थान पर केवल एक परमात्मा के संकल्प वाली विश्व व्यापी, विश्व शांति और सांझीदारी की नवीनतम विचारधारा को जन्म दिया।

इस विचारधारा के प्रचार के लिए गुरु जी ने भारत के अनेक प्रांतों की यात्राएं कीं। इसी कारण भिन्न-भिन्न प्रांतों में भाषाई परिर्वतनों के कारण श्रद्धालु गुरु जी को भिन्न-भिन्न नामों जैसे (गुरु) रविदास, रैदास, र्ख्इदास, रोहीदास, रायदास आदि नामों से पुकारने लगे। परन्तु ये सब नाम गुरु रविदास जी के ही हैं। गुरु जी का सब से प्रमाणित नाम (गुरु) रविदास ही प्रयोग करना चाहिए। गुरु रवीदास (व को बिहारी लगा कर प्रयोग अशुद्ध है) अत: गुरु रविदास (व को सिहारी लगा कर के) ही प्रयोग करना चाहिए। क्योंकि गुरु जी पूर्ण संसार के मार्गदर्शक हैं इसलिए हमारे द्वारा उनको भक्त, संत, कहने के स्थान पर गुरु कहना सब से उत्तम व शोभनीय है।

संत कर्मचन्द जी के कथन अनुसार, ''**चौदह सौ तैंतीस की**

माघ सुद्धी पंद्रास।। दुखियों के कल्याण हित प्रगटे श्री रविदास''।। अब सर्व प्रमाण हो चुका है कि गुरु जी का आगमन माघ मास की पूर्णमाशी सम्मत 1433 विक्रमी दिन रविवार अर्थात् जनवरी 1377 ई. को सीरगोवर्धनपुर वाराणसी (कांशी) उत्तर प्रदेश में पिता श्री संतोष दास जी, माता श्रीमति कलसी जी के गृह में हुआ। गुरु जी का विवाह (माता) श्रीमती लोना जी से हुआ। इनकी कोख से एक सपुत्र श्री विजय दास जी ने जन्म लिया।

गुरु रविदास जी के गुरु या इष्ट कोई देहधारी या देवी-देवता नहीं था। उनके गुरु और इष्ट केवल प्रभु परमात्मा ही थे। उसे ही गुरु जी अपनी पावन बानी में राम, गुसईंआ, माधो, हरि, मुकन्द आदि नामों से पुकारते हैं। गुरु रविदास जी चेत्रवदी चर्तुतुशी विक्रमी 1584 भाव मार्च 1528 ई. को 151 वर्ष की आयु व्यतीत करके ज्योति-जोति समा गए।

विचारधारा श्री गुरु रविदास जी

* गुरु रविदास जी के अनुसार संसार के जीवों को उत्पन्न करने वाला, पालने वाला और समाप्त करने वाला केवल परमात्मा ही है अत: उस की ही पूजा करो। **हरि जपत तेऊ जना....शब्द नं. 31 और सलोक- हरि सो हीरा छाडि कै.....**

* मूर्ति पूजा गुरु रविदास जी की बाणी में वर्जित है।

नाम तेरो आरती.....शब्द नं. 23

* और मूर्तियों, ठाकरों आदि को दुग्ध, पुष्प और पदार्थ अपर्ण करने व्यर्थ हैं।

दूधु त बछरै थनहु.....शब्द नं. 13

* चारों युगों की पूजा विधि एवं धार्मिक आडम्बरों से प्रभु नहीं मिल सकता।

सतिजुगि सतु तेता जगी.....शब्द नं. 6

* परमात्मा मनुष्य के अन्दर ही उस को तीर्थ यात्रायें, तीर्थ स्नान, जंगलों या पर्वतों में पाने की कोई अवश्यकता नहीं।

गुरु जी का आदेश है, **''अन्तर गति रांचै नही बाहर कथै उजास''।।** और **''जैसे कुरन्क नही पाइउ भेद.....शब्द नं. 37''**

* सब से प्रथम हम गुरु रविदास जी की विचारधारा के मूल सिद्धांतों को अपने जीवन में अपनायें। उस के उपरान्त स्वास-स्वास प्रभु का स्मरण करें तो हम प्रभु को प्राप्त कर सकते हैं।

* **''माधो अबिया हित कीन।। विबेक दीप मलीन।। ..... शब्द नं. 7** के अनुसार ज्ञानवान हो जाओ। अपने बच्चों को अधिक से अधिक पढ़ाओ और गुरु रविदास जी की विचारधारा को समझो।

* गुरु रविदास जी मदुरा एवं नशों से दूर रहने की प्रेरणा देते हैं। **''सुरसरी सलल क्रित..... शब्द नं. 38''**

* गुरु रविदास और इस विचारधारा वाले गुरु साहिबान के नाम लेने वाले समाज का बोला, **''जय गुरुदेव! धन गुरुदेव''!** है। पहला पुरुष बुलाने वाला कहता है - जय गुरुदेव! और दूसरा पुरुष - धन गुरुदेव! कह कर अपने आदि गुरु साहिबान की जय बुलाते हैं। * हमारे समाज के झंडे का रंग **'मजीठ'** का है।

''मेरे रमईए रंग मजीठ का.....शब्द नं. 4''

इस लिए हमारे सब धार्मिक स्थानों, समागमों और समाजिक रसमों में **'मजीठ'** का रंग अपनाएं। यह रंग **लाल-काला या डारक-मजैंटा** होता है।

संसार की सब से महान विचारधारा

भारत के मूलवासी, आदिवासी समाज को यह बात मन में टिका लेनी चाहिए कि तुम संसार के सब से महान लोग हो। तुम भारत के मूल निवासी हो। सब से पूर्व तुम्हारे पूर्वजों ने संसार की रूढ़ीवादी, पक्षपाती और अमानवीय, धार्मिक, समाजिक मूल्यों को तुच्छ जान कर एक पारब्रह्म परमात्मा के संकल्प की वैज्ञानिक विश्वव्यापी, विश्व सांझेदारी, एकता भाईचारक सांझ से ओतप्रोत विचारधारा प्रदान की है।

गुरु रविदास जी के अनुसार, "**रेचित चेत अचेत।। काहे न बालमीकिह देख**"।। और "**नामेदव, कबीर, तिलोचन, सधना, सैन तरै।।**" हमारे रहिबर इस विचारधारा को पैदा करके स्वयं मुक्त हुए और हमारे लिए मुक्ति का मार्ग बता कर गए हैं। तुम्हें इस संसार में लुक छुप कर नहीं प्रत्युत् सिर ऊंचा करके मान-सम्मान से जीवत रहना चाहिए क्योंकि तुम इन महान पूर्वजों का अंश हो, सेवक हो। आओ! हम सब इन महान अग्रगामियों की विचारधारा को समझें, विचारें, अपने जीवन में अपनाएं और अपने बच्चों अपने समाज को इस से परिचय करवाएं और सतगुरु रविदास, सतगुरु वाल्मीकि, सतगुरु नामदेव, सतगुरु कबीर, सतगुरु त्रिलोचन, सतगुरु सधना, सतगुरु सैन की संतान और सेवक एक झंडे के नीचे एकत्र होकर अपने बिखरते जा रहे संविधानिक अधिकारों की प्राप्ति के लिए संघर्ष करें।

शब्द - 1

सिरी रागु बाणी श्री रविदास जी की

१ओ सतिगुर प्रसादि॥

तोही मोही मोही तोही अंतरु कैसा॥
कनक कटिक जल तरंग जैसा॥१॥
जउ पै हम न पाप करंता अहे अनंता॥
पतित पावन नामु कैसे हुंता॥१॥रहाउ॥
तुम्ह जु नाइक आछहु अंतरजामी॥
प्रभ ते जनु जानीजै जन ते सुआमी॥२॥
सरीरु आराधै मो कउ बीचारु देहू॥
रविदास सम दल समझावै कोऊ॥३॥ (पन्ना 93)

शब्द - 2

रागु गउड़ी रविदास जी के पदे गउड़ी गुआरेरी

१ओ सतिनामु करता पुरखु गुर प्रसादि॥

मेरी संगति पोच सोच दिनु राती॥
मेरा करमु कुटिलता जनमु कुभांती॥१॥
राम गुसईआ जीअ के जीवना॥
मोहि न बिसारहु मै जनु तेरा॥१॥ रहाउ॥
मेरी हरहु बिपति जन करहु सुभाई॥

चरण न छाडउ सरीर कल जाई ॥२ ॥
कहु रविदास परउ तेरी साभा ॥
बेगि मिलहु जन करि न बिलांबा ॥३ ॥१ ॥
(पन्ना 345)

शब्द – 3

रागु गउड़ी रविदास जी के पदे गउड़ी गुआरेरी
१ओ सतिनामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥

बेगमपुरा सहर को नाउ ॥
दूखु अंदोहु नही तिहि ठाउ ॥
नां तसवीस खिराजु न मालु ॥
खउफु न खता न तरसु जवालु ॥१ ॥
अब मोहि खूब वतन गह पाई ॥
ऊहां खैरि सदा मेरे भाई ॥१ ॥ रहाउ ॥
काइमु दाइमु सदा पातिसाही ॥
दोम न सेम एक सो आही ॥
आबादानु सदा मसहूर ॥
ऊहां गनी बसहि मामूर ॥२ ॥
तिउ तिउ सैल करहि जिउ भावै ॥
महरम महल न को अटकावै ॥

कहि रविदास खलास चमारा ॥
जो हम सहरी सु मीतु हमारा ॥३ ॥२ ॥ (पन्ना 345)

शब्द – 4

१ओ सतिगुर प्रसादि ॥
गउड़ी बैरागणि रविदास जीउ ॥

घट अवघट डूगर घणा इक निरगुणु बैलु हमार ॥
रमईए सिउ एक बेनती मेरी पूंजी राखु मुरारि ॥१ ॥
को बनजारो राम को
मेरा टांडा लादिआ जाइ रे ॥१ ॥ रहाउ ॥
हउ बनजारो राम को सहज करउ ब्यापारु ॥
मै राम नाम धनु लादिआ
बिखु लादी संसारि ॥२ ॥
उरवार पार के दानीआ
लिखि लेहु आल पतालु ॥
मोहि जम डंडु न लागई
तजीले सरब जंजाल ॥३ ॥
जैसा रंगु कसुंभ का तैसा इहु संसारु ॥
मेरे रमईए रंगु मजीठ का
कहु रविदास चमार ॥४ ॥१ ॥ (पन्ना 345)

शब्द – 5

गउड़ी पूरबी रविदास जीउ

१ओ सतिगुर प्रसादि॥

कूपु भरिओ जैसे दादिरा कछु देसु बिदेसु न बूझ॥
ऐसे मेरा मनु बिखिआ बिमोहिआ
कछु आरा पारु न सूझ॥१॥
सगल भवन के नाइका
इकु छिनु दरसु दिखाइ जी॥१॥ रहाउ॥
मलिन भई मति माधवा तेरी गति लखी न जाइ॥
करहु क्रिपा भ्रमु चूकई मै सुमति देहु समझाइ॥२॥
जोगीसर पावहि नही तुअ गुण कथनु अपार॥
प्रेम भगति कै कारणै कहु रविदास चमार॥३॥१॥

(पन्ना 346)

शब्द – 6

गउड़ी बैरागणि रविदास जीउ

१ओ सतिगुर प्रसादि॥

सतिजुगि सतु तेता जगी दुआपरि पूजाचार॥
तीनौ जुग तीनौ दिड़े कलि केवल नाम अधार॥१॥
पारु कैसे पाइबो रे॥

मो सउ कोऊ न कहै समझाइ॥
जा ते आवा गवनु बिलाइ॥१॥ रहाउ॥
बहु बिधि धरम निरुपीए करता दीसै सभ लोइ॥
कवन करम ते छूटीऐ जिह साधे सभ सिधि होइ॥२॥
करम अकरम बीचारीऐ संका सुनि बेद पुरान॥
संसा सद हिरदै बसै कउनु हिरै अभिमानु॥३॥
बाहरु उदकि पखारीऐ घट भीतरि बिबिधि बिकार।
सुध कवन पर होइबो
सुच कुंचर बिधि बिउहार॥४॥
रवि प्रगास रजनी जथा गति जानत सभ संसार॥
पारस मानो ताबो छुए कनक होत नही बार॥५॥
परम परस गुरु भेटीऐ पूरब लिखत लिलाट।।
उनमन मन मन ही मिले छुटकत बजर कपाट॥६॥
भगति जुगति मति सति करी
भ्रम बंधन काटि बिकार॥
सोई बसि रसि मन मिले
गुन निरगुन एक बिचार॥७॥
अनिक जतन निग्रह कीए टारी न टरै भ्रम फास॥
प्रेम भगति नही ऊपजै ता ते रविदास उदास॥८॥१॥

(पन्ना 346)

शब्द – 7

"१ओ सतिनामु करता पुरखु निरभओ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरप्रसादि।।

रागु आसा बाणी भगता की
कबीर जीउ नामदेउ जीउ रविदास जीउ।।"
आसा बाणी श्री रविदास जीउ की

म्रिग मीन भ्रिंग पतंग कुंचर एक दोख बिनास॥
पंच दोख असाध जा महि ता की केतक आस॥१॥
माधो अबिदिआ हित कीन॥
बिबेक दीप मलीन॥१॥ रहाउ॥
त्रिगद जोनि अचेत संभव पुंन पाप असोच॥
मानुखा अवतार दुलभ तिही संगति पोच॥२॥
जीअ जंत जहा जहा लगु करम के बसि जाइ॥
काल फास अबध लागे कछु न चलै उपाइ॥३॥
रविदास दास उदास तजु भ्रमु
तपन तपु गुर गिआन॥
भगत जन भै हरन
परमानंद करहु निदान॥४॥१॥ (पन्ना 486)

शब्द – 8

आसा बाणी श्री रविदास जीउ की
१ओ सतिगुर प्रसादि॥

संत तुझी तनु संगति प्रान॥
सतिगुर गिआन जानै संत देवा देव॥१॥
संत ची संगति संत कथा रसु॥
संत प्रेम माझै दीजै देवा देव॥१॥ रहाउ॥
संत आचरण संत चो मारगु
संत च ओल्हग ओल्हगणी॥२॥
अउर इक मागउ भगति चिंतामणि॥
जणी लखावहु असंत पापी सणि॥३॥
रविदासु भणै जो जाणै सो जाणु॥
संत अनंतहि अंतरु नाही॥४॥२॥ (पन्ना 486)

शब्द – 9

आसा बाणी श्री रविदास जीउ की
१ओ सतिगुर प्रसादि॥

तुम चंदन हम इरंड बापुरे संगि तुमारे बासा॥
नीच रूख ते ऊच भए है गंध सुगंध निवासा॥१॥
माधउ सतसंगति सरनि तुम्हारी॥

हम अउगन तुम्ह उपकारी ॥१ ॥ रहाउ ॥
तुम मखतूल सुपेद सपीअल
हम बपुरे जस कीरा ॥
सतसंगति मिलि रहीऐ माधउ जैसे मधुप मखीरा ॥२ ॥
जाती ओछा पाती ओछा ओछा जनमु हमारा ॥
राजा राम की सेव न कीन्ही
कहि रविदास चमारा ॥३ ॥३ ॥ (पन्ना 486)

शब्द - 10

आसा बाणी श्री रविदास जीउ की

१ओ सतिगुर प्रसादि ॥

कहा भइओ जउ तनु भइओ छिनु छिनु ॥
प्रेमु जाइ तउ डरपै तेरो जनु ॥१ ॥
तुझहि चरन अरबिंद भवन मनु ॥
पान करत पाइओ पाइओ रामईआ धनु ॥१ ॥ रहाउ ॥
संपति बिपति पटल माइआ धनु ॥
ता महि मगन होत न तेरो जनु ॥२ ॥
प्रेम की जेवरी बाधिओ तेरो जन ॥
कहि रविदास छूटिबो कवन गुन ॥३ ॥४ ॥
(पन्ना 486)

शब्द - 11

आसा बाणी श्री रविदास जीउ की

१ओ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरे ॥
हरि सिमरत जन गए निसतरि तरे ॥१ ॥ रहाउ ॥
हरि के नाम कबीर उजागर ॥
जनम जनम के काटे कागर ॥१ ॥
निमत नामदेउ दूधु पीआइआ ॥
तउ जग जनम संकट नही आइआ ॥२ ॥
जन रविदास राम रंगि राता ॥
इउ गुर परसादि नरक नही जाता ॥३ ॥५ ॥
(पन्ना 487)

शब्द - 12

आसा बाणी श्री रविदास जीउ की

१ओ सतिगुर प्रसादि ॥

माटी को पुतरा कैसे नचतु है ॥
देखै देखै सुनै बोलै दउरिओ फिरतु है ॥१ ॥ रहाउ ॥
जब कछु पावै तब गरबु करतु है ॥
माइआ गई तब रोवनु लगतु है ॥१ ॥

मन बच क्रम रस कसहि लुभाना॥
बिनसि गइआ जाइ कहूं समाना॥२॥
कहि रविदास बाजी जगु भाई॥
बाजीगर सउ मोहि प्रीति बनि आई॥ ३॥६॥

(पन्ना 487)

शब्द - 13

गूजरी श्री रविदास जी के पदे घरु ३

१ओ सतिगुर प्रसादि॥

दूधु त बछरै थनहु बिटारिओ॥
फूलु भवरि जलु मीनि बिगारिओ॥१॥
माई गोबिंद पूजा कहा लै चरावउ॥
अवरु न फूलु अनूपु न पावउ॥१॥ रहाउ॥
मैलागर बेर्हे है भुइअंगा॥
बिखु अंम्रितु बसहि इक संगा॥२॥
धूप दीप नईबेदहि बासा॥
कैसे पूज करहि तेरी दासा॥३॥
तनु मनु अरपउ पूज चरावउ॥
गुर परसादि निरंजनु पावउ॥४॥
पूजा अरचा आहि न तोरी॥
कहि रविदास कवन गति मोरी॥५॥१॥ (पन्ना 525)

शब्द - 14

राग सोरठि बाणी भगत रविदास जी की

१ओ सतिगुर प्रसादि॥

जब हम होते तब तू नाही अब तूही मै नाही॥
अनल अगम जैसे लहरि मइ ओदधि
जल केवल जल मांही॥१॥
माधवे किआ कहीऐ भ्रमु ऐसा॥
जैसा मानीऐ होइ न तैसा॥१॥ रहाउ॥
नरपति एकु सिंघासनि सोइआ
सुपने भइआ भिखारी॥
अछत राज बिछुरत दुखु पाइआ
सो गति भई हमारी॥ २॥
राज भुइअंग प्रसंग जैसे हहि
अब कछु मरमु जनाइआ॥
अनिक कटक जैसे भूलि परे
अब कहते कहनु न आइआ॥३॥
सरबे एकु अनेकै सुआमी सभ घट भोगवै सोई॥
कहि रविदास हाथ पै नैरै
सहजे होइ सु होई॥४॥१॥ (पन्ना 657)

शब्द – 15

राग सोरठि बाणी भगत रविदास जी की

१ओ सतिगुर प्रसादि॥

जउ हम बांधे मोह फास
हम प्रेम बधनि तुम बाधे॥
अपने छूटन को जतनु करहु
हम छूटे तुम आराधे॥१॥
माधवे जानत हहु जैसी तैसी॥
अब कहा करहुगे ऐसी॥१॥ रहाउ॥
मीनु पकरि फांकिओ
अरु काटिओ रांधि कीओ बहुबानी॥
खंड खंड करि भोजनु कीनो
तऊ न बिसरिओ पानी॥२॥
आपन बापै नाही किसी को भावन को हरि राजा॥
मोह पटल सभु जगतु बिआपिओ
भगत नही संतापा॥३॥
कहि रविदास भगति इक बाढी
अब इह का सिउ कहीऐ॥
जा कारनि हम तुम आराधे
सो दुखु अजहू सहीऐ॥४॥२॥ **(पन्ना 658)**

शब्द – 16

राग सोरठि बाणी भगत रविदास जी की

१ओ सतिगुर प्रसादि॥

दुलभ जनमु पुंन फल पाइओ
बिरथा जात अबिबेकै॥
राजे इंद्र समसरि ग्रिह आसन
बिनु हरि भगति कहहु किह लेखै॥१॥
न वीचारिओ राजा राम को रसु॥
जिह रस अनरस बीसरि जाही॥१॥ रहाउ॥
जानि अजान भए हम बावर
सोच असोच दिवस जाही।
इंद्री सबल निबल बिबेक बुधि
परमारथ परवेस नही॥२॥
कहीअत आन अचरीअत अन कछु
समझ न परै अपर माइआ॥
कहि रविदास उदास दास मति
परहरि कोपु करहु जीअ दइआ॥३॥३॥
(पन्ना 658)

शब्द – 17

राग सोरठि बाणी भगत रविदास जी की॥

१ओ सतिगुर प्रसादि॥

सुख सागरु सुरतर चिंतामनि कामधेनु बसि जा के॥
चारि पदारथ असट दसा सिधि
नव निधि कर तल ता के॥१॥
हरि हरि हरि न जपहि रसना॥
अवर सभ तिआगि बचन रचना॥१॥ रहाउ॥
नाना खिआन पुरान बेद बिधि चउतीस अखर मांही॥
बिआस बिचारि कहिओ परमारथु
राम नाम सरि नाही॥२॥
सहज समाधि उपाधि रहत फुनि
बडै भागि लिव लागी॥
कहि रविदास प्रगासु रिदै धरि जनम
मरन भै भागी॥३॥४॥ (पन्ना 658)

शब्द – 18

राग सोरठि बाणी भगत रविदास जी की

१ओ सतिगुर प्रसादि॥

जउ तुम गिरिवर तउ हम मोरा॥

जउ तुम चंद तउ हम भए है चकोरा॥१॥
माधवे तुम न तोरहु तउ हम नही तोरहि॥
तुम सिउ तोरि कवन सिउ जोरहि॥१॥ रहाउ॥
जउ तुम दीवरा तउ हम बाती॥
जउ तुम तीरथ तउ हम जाती॥२॥
साची प्रीति हम तुम सिउ जोरी॥
तुम सिउ जोरि अवर संगि तोरी॥३॥
जह जह जाउ तहा तेरी सेवा॥
तुम सो ठाकुरु अउरु न देवा॥४॥
तुमरे भजन कटहि जम फांसा॥
भगति हेत गावै रविदासा॥५॥५॥ (पन्ना 658)

शब्द – 19

राग सोरठि बाणी भगत रविदास जी की

१ओ सतिगुर प्रसादि॥

जल की भीति पवन का थंभा रकत बुंद का गारा॥
हाड मास नांड़ी को पिंजरु पंखी बसै बिचारा॥१॥
प्रानी किआ मेरा किआ तेरा॥
जैसे तरवर पंखि बसेरा॥१॥ रहाउ॥
राखहु कंध उसारहु नीवां॥

साढे तीनि हाथ तेरी सीवां ॥२ ॥
बंके बाल पाग सिरि डेरी ॥
इहु तनु होइगो भसम की ढेरी ॥३ ॥
ऊचे मंदर सुंदर नारी ॥
राम नाम बिनु बाजी हारी ॥४ ॥
मेरी जाति कमीनी पांति कमीनी ओछा जनमु हमारा ॥
तुम सरनागति राजा राम चंद
कहि रविदास चमारा ॥५ ॥६ ॥ (पन्ना 659)

शब्द – 20

राग सोरठि बाणी भगत रविदास जी की

१ओ सतिगुर प्रसादि ॥

चमरटा गांठि न जनई ॥
लोगु गठावै पनही ॥१ ॥ रहाउ ॥
आर नही जिह तोपउ ॥
नही रांबी ठाउ रोपउ ॥१ ॥
लोगु गंठि गंठि खरा बिगूचा ॥
हउ बिनु गांठे जाइ पहूचा ॥२ ॥
रविदास जपै राम नामा ॥
मोहि जम सिउ नाही कामा ॥३ ॥७ ॥ (पन्ना 659)

शब्द – 21

धनासरी भगत रविदास जी की

१ओ सतिगुर प्रसादि ॥

हम सरि दीनु दइआलु न तुम सरि
अब पतीआरु किआ कीजै ॥
बचनी तोर मोर मनु मानै जन कउ पूरनु दीजै ॥१ ॥
हउ बलि बलि जाउ रमईआ कारने ॥
कारन कवन अबोल ॥ रहाउ ॥
बहुत जनम बिछुरे थे माधउ इहु जनमु तुम्हारे लेखे ॥
कहि रविदास आस लगि जीवउ
चिर भइओ दरसनु देखे ॥२ ॥१ ॥ (पन्ना 694)

शब्द – 22

धनासरी भगत रविदास जी की

१ओ सतिगुर प्रसादि ॥

चित सिमरनु करउ नैन अविलोकनो
स्त्रवन बानी सुजसु पूरि राखउ ॥
मनु सु मधुकरु करउ चरन हिरदे धरउ
रसन अंम्रित राम नाम भाखउ ॥१ ॥
मेरी प्रीति गोबिंद सिउ जिनि घटै ॥

मै तउ मोलि महगी लई जीअ सटै ॥१ ॥ रहाउ ॥
साधसंगति बिना भाउ नही ऊपजै
भाव बिनु भगति नही होइ तेरी ॥
कहै रविदासु इक बेनती हरि सिउ
पैज राखहु राजा राम मेरी ॥२ ॥२ ॥ (पन्ना 694)

शब्द – 23

धनासरी भगत रविदास जी की

१ओ सतिगुर प्रसादि ॥

नामु तेरो आरती मजनु मुरारे ॥
हरि के नाम बिनु झूठे सगल पासारे ॥१ ॥ रहाउ ॥
नामु तेरो आसनो नामु तेरो उरसा
नामु तेरा केसरो ले छिटकारे ॥
नामु तेरा अंभुला नामु तेरो चंदनो
घसि जपे नामु ले तुझहि कउ चारे ॥१ ॥
नामु तेरा दीवा नामु तेरो बाती
नामु तेरो तेलु ले माहि पसारे ॥
नाम तेरे की जोति लगाई भइओ
उजिआरो भवन सगलारे ॥२ ॥
नामु तेरो तागा नामु फूल माला

भार अठारह सगल जूठारे ॥
तेरो कीआ तुझहि किआ अरपउ
नामु तेरा तूही चवर ढोलारे ॥३ ॥
दस अठा अठसठे चारे खाणी
इहै वरतणि है सगल संसारे ॥
कहै रविदासु नामु तेरो आरती
सतिनामु है हरि भोग तुहारे ॥४ ॥३ ॥ (पन्ना 694)

शब्द – 24

जैतसरी बाणी भगता की

१ओ सतिगुर प्रसादि ॥

नाथ कछूअ न जानउ ॥
मनु माइआ कै हाथि बिकानउ ॥१ ॥ रहाउ ॥
तुम कहीअत हौ जगत गुर सुआमी ॥
हम कहीअत कलिजुग के कामी ॥१ ॥
इन पंचन मेरो मनु जु बिगारिओ ॥
पलु पलु हरि जी ते अंतरु पारिओ ॥२ ॥
जत देखउ तत दुख की रासी ॥
अजौं न पत्याइ निगम भए साखी ॥३ ॥
गोतम नारि उमापति स्वामी ॥

सीसु धरनि सहस भग गांमी ॥४॥
इन दूतन खलु बधु करि मारिओ ॥
बडो निलाजु अजहू नही हारिओ ॥५॥
कहि रविदास कहा कैसे कीजै ॥
बिन रघुनाथ सरनि का की लीजै ॥६॥ १॥
(पन्ना 710)

शब्द - 25

राग सूही बाणी श्री रविदास जीउ की

१ओ सतिगुर प्रसादि ॥

सह की सार सुहागनि जानै ॥
तजि अभिमानु सुख रलीआ मानै ॥
तनु मनु देइ न अंतरु राखै ॥
अवरा देखि न सुनै अभाखै ॥१॥
सो कत जानै पीर पराई ॥
जा कै अंतरि दरदु न पाई ॥१॥ रहाउ ॥
दुखी दुहागनि दुइ पख हीनी ॥
जिनि नाह निरंतरि भगति न कीनी ॥
पुर सलात का पंथु दुहेला ॥
संगि न साथी गवनु इकेला ॥२॥

दुखीआ दरदवंदु दरि आइआ ॥
बहुतु पिआस जबाबु न पाइआ ॥
कहि रविदास सरनि प्रभ तेरी ॥
जिउ जानहु तिउ करु गति मेरी ॥३॥१॥ (पन्ना 793)

शब्द - 26

राग सूही बाणी श्री रविदास जीउ की ॥

१ओ सतिगुर प्रसादि ॥

जो दिन आवहि सो दिन जाही ॥
करना कूचु रहनु थिरु नाही ॥
संगु चलत है हम भी चलना ॥
दूरि गवनु सिर ऊपरि मरना ॥१॥
किआ तू सोइआ जागु इआना ॥
तै जीवनु जगि सचु करि जाना ॥१॥ रहाउ ॥
जिनि जीउ दीआ सु रिजकु अंबरावै ॥
सभ घट भीतरि हाटु चलावै ॥
करि बंदिगी छाडि मै मेरा ॥
हिरदै नामु सम्हारि सवेरा ॥२॥
जनमु सिरानो पंथु न सवारा ॥
सांझ परी दह दिस अंधिआरा ॥

कहि रविदास निदानि दिवाने॥
चेतसि नाही दुनीआ फन खाने॥३॥२॥

(पन्ना 793)

शब्द – 27

राग सूही बाणी श्री रविदास जीउ की

१ओ सतिगुर प्रसादि॥

ऊचे मंदर साल रसोई॥
एक घरी फुनि रहनु न होई॥१॥
इहु तनु ऐसा जैसे घास की टाटी॥
जलि गइओ घासु
रलि गइओ माटी॥१॥ रहाउ॥
भाई बंध कुटंब सहेरा॥
ओइ भी लागे काढु सवेरा॥२॥
घर की नारि उरहि तन लागी॥
उह तउ भूतु भूतु करि भागी॥३॥
कहि रविदास सभै जगु लूटिआ॥
हम तउ एक राम कहि छूटिआ॥४॥३॥

(पन्ना 794)

शब्द – 28

बिलावलु बाणी रविदास भगत की

१ओ सतिगुर प्रसादि॥

दारिदु देखि सभ को हसै ऐसी दसा हमारी॥
असट दसा सिधि कर तलै सभ क्रिपा तुमारी॥१॥
तु जानत मै किछु नही भव खंडन राम॥
सगल जीअ सरनागती प्रभ पूरन काम॥१॥ रहाउ॥
जो तेरी सरनागता तिन नाही भारु॥
ऊच नीच तुम ते तरे आलजु संसारु॥२॥
कहि रविदास अकथ कथा बहु काइ करीजै॥
जैसा तू तैसा तुही किआ उपमा दीजै॥३॥१॥

(पन्ना 858)

शब्द – 29

बिलावल बाणी रविदास भगत की

१ओ सतिगुर प्रसादि॥

जिह कुल साधु बैसनो होइ॥
बरन अबरन रंकु नही ईसुरु
बिमल बासु जानीऐ जगि सोइ॥१॥ रहाउ॥
ब्रहमन बैस सूद अरु ख्यत्री
डोम चंडार मलेछ मन सोइ॥

होइ पुनीत भगवंत भजन ते
आपु तारि तारे कुल दोइ ॥१ ॥
धंनि सु गाउ धंनि सो ठाउ
धंनि पुनीत कुटंब सभ लोइ ॥
जिनि पीआ सार रसु तजे आन रस
होइ रस मगन डारे बिखु खोइ ॥२ ॥
पंडित सूर छत्रपति राजा
भगत बराबर अउरु न कोइ ॥
जैसे पुरैन पात रहै जल समीप
भनि रविदास जनमे जगि ओइ ॥३ ॥२ ॥ (पन्ना 858)

शब्द - 30

रागु गोंड बाणी रविदास जीउ की घरु २

१ओ सतिगुर प्रसादि ॥

मुकंद मुकंद जपहु संसार ॥
बिनु मुकंद तनु होइ अउहार ॥
सोई मुकंदु मुकति का दाता ॥
सोई मुकंदु हमरा पित माता ॥१ ॥
जीवत मुकंदे मरत मुकंदे ॥
ता के सेवक कउ सदा अनंदे ॥१ ॥ रहाउ ॥

मुकंद मुकंद हमारे प्रानं ॥
जपि मुकंद मसतकि नीसानं ॥
सेव मुकंद करै बैरागी ॥
सोई मुकंदु दुरबल धनु लाधी ॥२ ॥
एक मुकंदु करै उपकारु ॥
हमरा कहा करै संसारु ॥
मेटी जाति हूए दरबारि ॥
तुही मुकंद जोग जुग तारि ॥३ ॥
उपजिओ गिआनु हूआ परगास ॥
करि किरपा लीने कीट दास ॥
कहु रविदास अब त्रिसना चूकी ॥
जपि मुकंद सेवा ताहू की ॥४ ॥१ ॥ (पन्ना 875)

शब्द - 31

रागु गोंड बाणी रविदास जीउ की घरु २

१ओ सतिगुर प्रसादि ॥

जे ओहु अठसठि तीरथ न्हावै ॥
जे ओहु दुआदस सिला पूजावै ॥
जे ओहु कूप तटा देवावै ॥
करै निंद सभ बिरथा जावै ॥१ ॥

साध का निंदकु कैसे तरै॥
सरपर जानहु नरक ही परै॥१ ॥ रहाउ॥
जे ओहु ग्रहन करै कुलखेति॥
अरपै नारि सीगार समेति॥
सगली सिंम्रिति स्रवनी सुनै॥
करै निंद कवनै नही गुनै॥२ ॥
जे ओहु अनिक प्रसाद करावै॥
भूमि दान सोभा मंडपि पावै॥
अपना बिगारि बिरांना सांढै॥
करै निंद बहु जोनी हांढै॥३ ॥
निंदा कहा करहु संसारा॥
निंदक का परगटि पाहारा॥
निंदकु सोधि साधि बीचारिआ॥
कहु रविदास पापी नरकि सिधारिआ॥४ ॥२ ॥

(पन्ना 875)

शब्द - 32

रामकली बाणी रविदास जी की

१ओ सतिगुर प्रसादि॥

पड़ीऐ गुनीऐ नामु सभु सुनीऐ अनभउ भाउ न दरसै॥
लोहा कंचनु हिरन होइ कैसे जउ पारसहि न परसै॥१ ॥

देव संसै गांठि न छूटै॥
काम क्रोध माइआ मद मतसर
इन पंचहु मिलि लूटे॥१ ॥ रहाउ॥
हम बड कबि कुलीन हम पंडित
हम जोगी संनिआसी॥
गिआनी गुनी सूर हम दाते
इह बुधि कबहि न नासी॥२ ॥
कहु रविदास सभै नही समझसि भूल परे जैसे बउरे॥
मोहि अधारु नामु नाराइन
जीवन प्रांन धन मोरे॥३ ॥१ ॥ (पन्ना 973)

शब्द - 33

रागु मारू बाणी रविदास जीउ की

१ओ सतिगुर प्रसादि॥

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै॥
गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै॥१ ॥ रहाउ॥
जा की छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै॥
नीचह ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै॥१ ॥
नामदेव कबीरु तिलोचनु सधना सैनु तरै॥
कहि रविदासु सुनहु रे संतहु
हरि जीउ ते सभै सरै॥२ ॥१ ॥ (पन्ना 1106)

शब्द - 34

रागु मारू बाणी रविदास जीउ की

१ओ सतिगुर प्रसादि॥

सुख सागर सुरितरु चिंतामनि
कामधेन बसि जा के रे॥
चारि पदारथ असट महा सिधि
नव निधि कर तल ता कै॥१॥
हरि हरि हरि न जपसि रसना॥
अवर सभ छाडि बचन रचना॥१॥ रहाउ॥
नाना खिआन पुरान बेद बिधि चउतीस अछर माही॥
बिआस बीचारि कहिओ परमारथु
राम नाम सरि नाही॥२॥
सहज समाधि उपाधि रहत होइ बडे भागि लिव लागी।
कहि रविदास उदास दास मति
जनम मरन भै भागी॥३॥२॥ (पन्ना 1106)

शब्द - 35

राग केदारा बाणी रविदास जीउ की

१ओ सतिगुर प्रसादि॥

खटु करम कुल संजुगतु है हरि भगति हिरदै नाहि॥

चरनारबिंद न कथा भावै सुपच तुलि समानि॥१॥
रे चित चेति चेत अचेत॥
काहे न बालमीकहि देख॥
किसु जाति ते किह पदहि
अमरिओ राम भगति बिसेख॥१॥ रहाउ॥
सुआन सत्रु अजातु सभ ते क्रिस्न लावै हेतु॥
लोगु बपुरा किआ सराहै तीनि लोक प्रवेस॥२॥
अजामलु पिंगुला लुभतु कुंचरु गए हरि कै पास॥
ऐसे दुरमति निसतरे तू किउ न तरहि रविदास॥३॥१॥
(पन्ना 1124)

शब्द - 36

भैरउ बाणी रविदास जीउ की घरु २

१ओ सतिगुर प्रसादि॥

बिनु देखे उपजै नही आसा॥
जो दीसै सो होइ बिनासा॥
बरन सहित जो जापै नामु॥
सो जोगी केवल निहकामु॥१॥
परचै रामु रवै जउ कोई॥
पारसु परसै दुबिधा न होई॥१॥ रहाउ॥
सो मुनि मन की दुबिधा खाइ॥

बिनु दुआरै त्रै लोक समाइ॥
मन का सुभाउ सभु कोई करै॥
करता होइ सु अनभै रहै॥२॥
फल कारन फूली बनराइ॥
फलु लागा तब फूलु बिलाइ॥
गिआनै कारन करम अभिआसु॥
गिआनु भइआ तह करमह नासु॥३॥
घ्रित कारन दधि मथै सइआन॥
जीवत मुकत सदा निरबान॥
कहि रविदास परम बैराग॥
रिदै रामु की न जपसि अभाग॥४॥१॥ (पन्ना 1167)

शब्द – 37

बसंतु बाणी रविदास जी की

१ओ सतिगुर प्रसादि॥

तुझहि सुझंता कछू नाहि॥
पहिरावा देखे ऊभि जाहि॥
गरबवती का नाही ठाउ॥
तेरी गरदनि ऊपरि लवै काउ॥१॥
तू कांइ गरबहि बावली॥

जैसे भादउ खूंबराजु
तू तिस ते खरी उतावली॥१॥ रहाउ॥
जैसे कुरंक नही पाइओ भेदु॥
तनि सुगंध ढूढै प्रदेसु॥
अप तन का जो करे बीचारु॥
तिसु नही जमकंकुर करे खुआरु॥२॥
पुत्र कलत्र का करहि अहंकारु॥
ठाकुरु लेखा मगनहारु॥
फेड़े का दुखु सहै जीउ॥
पाछे किसहि पुकारहि पीउ पीउ॥३॥
साधू की जउ लेहि ओट॥
तेरे मिटहि पाप सभ कोटि कोटि॥
कहि रविदास जो जपै नामु॥
तिसु जाति न जनमु न जोनि कामु॥ ४॥१॥

(पन्ना 1196)

शब्द – 38

मलार बाणी भगत रविदास जी की

१ओ सतिगुर प्रसादि॥

नागर जनां मेरी जाति बिखिआत चंमारं॥
रिदै राम गोबिंद गुन सारं॥१॥ रहाउ॥

सुरसरी सलल क्रित बारुनी रे
संत जन करत नही पानं॥
सुरा अपवित्र नत अवर जल रे
सुरसरी मिलत नहि होइ आनं॥१॥
तर तारि अपवित्र कर मानीऐ रे
जैसे कागरा करत बीचारं॥
भगति भागउतु लिखीऐ तिह ऊपरे
पूजीऐ करि नमसकारं॥२॥
मेरी जाति कुट बांढला ढोर ढोवंता
नितहि बानारसी आस पासा॥
अब बिप्र परधान तिहि करहि डंडउति
तेरे नाम सरणाइ रविदासु दासा॥३॥१॥

(पन्ना 1293)

शब्द – 39

मलार बाणी भगत रविदास जी की

१ओ सतिगुर प्रसादि॥

हरि जपत तेऊ जना पदम कवलास पति
तास सम तुलि नही आन कोऊ॥
एक ही एक अनेक होइ बिसथरिओ
आन रे आन भरपूरि सोऊ॥ रहाउ॥

जा कै भागवतु लेखिऐ अवरु नही पेखीऐ
तास की जाति आछोप छीपा॥
बिआस महि लेखीऐ सनक महि पेखीऐ
नाम की नामना सपत दीपा॥१॥
जा कै ईदि बकरीदि कुल
गऊ रे बधु करहि मानीआहि सेख सहीद पीरा॥
जा कै बाप वैसी करी पूत ऐसी सरी
तिहू रे लोक परसिध कबीरा॥२॥
जा के कुटंब के ढेढ सभ
ढोर ढोवंत फिरहि
अजहु बंनारसी आस पासा॥
आचार सहित बिप्र करहि डंडउति
तिन तनै रविदास दासान दासा॥३॥१॥

(पन्ना 1293)

शब्द – 40

मलार बाणी रविदास जी की

१ओ सतिगुर प्रसादि॥

मिलत पिआरो प्रान नाथु कवन भगति ते॥
साधसंगति पाई परम गते॥ रहाउ॥

मैले कपरे कहा लउ धोवउ॥
आवैगी नीद कहा लगु सोवउ॥१॥
जोई जोई जोरिओ सोई सोई फाटिओ॥
झूठै बनजि उठि ही गई हाटिओ॥२॥
कहु रविदास भइओ जब लेखो॥
जोई जोई कीनो सोई सोई देखिओ॥ ३ ॥१ ॥३ ॥

(पन्ना 1293)

॥ सलोक॥

हरि सो हीरा छाडि कै करहि आन की आस॥
ते नर दोजक जाहिगे सति भाखै रविदास॥२४२॥

(पन्ना 1377)

क्रम नंबर सहित सभी शब्दों की व्याख्या (स्टीक)

१ओं सतिगुर प्रसादि।।

शब्द - 1

हे प्रभु! तुझ में व मुझ में और मुझ में व तुझ में क्या अन्तर है? अन्तर केवल इतना ही है जितना सोने व सोने से बने कड़े और जल व जल ऊपर पैदा हुई तरंग में है।।१।। हे प्रभु! यदि हम पाप ना करते तो पापियों को पवित्र करने वाला आपका नाम कैसे होता?।।१।। रहाउ।। आप अर्न्तयामी हो! मालिक से सेवक व सेवक से मालिक की पहचान हो जाती है।।२।। गुरु रविदास जी फरमाते हैं, हे प्रभु! मुझे तन-मन से स्मरण की दात प्रदान कीजिए और मुझे कोई यह भी बताए कि आप सर्वव्यापक हैं।।३।।

शब्द - 2

मैं दिन-रात इसी चिन्ता में हूँ कि बुरे विकारों की संगति के कारण मेरा कर्म भी बुरा है। इसलिए मेरा सम्पूर्ण जीवन बुरा हो गया है।।१।। मेरे जीवन आधार! मुझे विसारें नहीं, मैं आप का सेवक हूँ।।१।। रहाउ।। मेरे विकारों की विपत्ति दूर करके मुझे उत्तम बनाएं। मैंने आप के चरण नहीं छोड़ने, चाहे मेरी जान ही क्यों न निकल जाए।।२।। गुरु रविदास जी विनती करते हैं कि हे प्रभु! मैं आप की शरण में हूँ, कृप्या मुझे शीघ्र दर्शन दीजिए।।३।।१।।

शब्द - 3

वह शहर जहां किसी को कोई दुःख, चिन्ता, घबराहट नहीं है, उस का नाम बेग़मपुरा है। वहां किसी को कोई टैक्स, डर, पीड़ा व घाटा नहीं है।।१।। अब मैंने सुंदर स्थान ढूंढ़ लिया है जहां

सर्वदा सुख ही सुख हैं।।१।।रहाउ।।वह स्थान भेद-भाव रहित व सदैव पातशाही वाला है-वह सर्वदा प्रसिद्ध है व वहां अमीर आत्मा वाले ही निवास करते हैं।।२।। बेग़मपुरा शहर में जैसे कोई चाहे घूम-फिर सकता है, प्रभु के महलों के पूर्ण भेदी भी उनको रोकते नहीं- गुरु रविदास जी फरमाते हैं कि जो मेरे शहर का निवासी है, वह मेरा मित्र है।।३।।२।।

शब्द - 4

जहां से प्रभु के नाम ज्ञान की पूंजी का काफिला लेकर जाना है, वह बड़ा कठिन पहाड़ी रास्ता है। परन्तु मेरा बैल रूपी मन निर्बल है। हे प्रभु! मेरी पूंजी की रक्षा करनी।।२।। है कोई प्रभु के नाम का व्यापारी? प्रभु के नाम रूपी धन से मेरा गड्डा लदा हुआ जा रहा है।।२।। रहाउ।। हे चित्रगुप्तो! मेरे विषय में जो मर्ज़ी उल्ट-पुल्ट लिख लो फिर भी मुझे (यमदूतों) की फांसी नहीं लगेगी क्योंकि मैंने पूर्ण जंजाल त्याग दिए हैं।।३।। गुरु रविदास जी फरमाते हैं कि संसार का रंग कुसंभा के पुष्प के रंग जैसा कच्चा है, पर मेरे प्रभु के नाम का रंग मजीठ जैसा पक्का रंग है।।४।।१।।

शब्द - 5

कुएं में मेढ़कों की भांति (जिन को कुएं से बाहर की दुनिया का ज्ञान नहीं होता), मेरा मन विकारों में फंसा हुआ है - इसीलिए हे प्रभु! मुझे आप के प्रति ज्ञान नहीं है।।१।। हे सर्व संसार का नेतृत्व करने वाले प्रभु! मुझे एक पल के लिए दर्शन दें।।१।। रहाउ।। विकारों के कारण मुझे आपकी महानता का ज्ञान नहीं है। कृपा करें कि मुझे आप को जानने की समझ आ जाए और मेरे भ्रम

दूर हो जाएं।।२।। आप के गुण अनंत हैं। इन को जोगी तो क्या, जोगियों के गुरु भी नहीं जान सके। मैं (गुरु) रविदास चमार तो तेरी प्रेम भक्ति प्राप्त करने के लिए गुण गाता हूँ।।३।।१।।

शब्द - 6

सतियुग की पूजा-विधि थी दान देना, त्रेता की यज्ञ करना, द्वापर में देवतों की पूजा और कलियुग में अवतारों भाव श्री राम चन्द्र, श्री कृष्ण जी की मूर्तियों की पूजा।।१।। परन्तु इस पूजा विधि से तो भवसागर से पार हुआ नहीं जा सकता। मुझे कोई समझा कर स्पष्ट नहीं कर रहा कि आवागमन से मुक्ति कैसे मिले।।१।।रहाउ।। शास्त्रों के अनुसार बहुत सी धार्मिक विधियां करती हुई दुनिया नज़र आ रही है। परन्तु कौन सा कर्म किया जाये जिससे मुक्ति मिले (क्योंकि यह कर्म करने से तो मुक्ति मिलेगी ही नहीं)।।२।। वेद और पुराण कुछ कर्म करने की आज्ञा देते हैं व कुछ मना करते हैं। इस से शंका और अधिक बढ़ जाती है। भ्रम और विकार और भी विकृत हो जाते हैं। इस तरह मन में सदैव के लिए स्थिर हुए भ्रमों-विकारों से उत्पन्न हंकार को कैसे दूर किया जाए।।३।। तीर्थ स्नान से बाहरी मैल तो दूर हो सकती है, परन्तु भीतर विकार टिके रहते हैं। यह शुद्ध (पवित्र) होना तो हाथी के स्नान जैसे है जो स्नान करने के उपरान्त अपने ऊपर मिट्टी गिरा लेता है।।४।। जैसे पूर्ण संसार जानता है कि सूर्य के प्रकाश से रात्रि का अंधेरा दूर हो जाता है और पारस को तांबे के साथ स्पर्श करने पर उस ताम्र को स्वर्ण बनने में विलम्ब नहीं होता।।५।। इस प्रकार अच्छे भाग्य से जब पारसों का पारस (स्पर्श मणि-कल्पित पत्थर)

गुरु मिल जाए और उसका मिलाप साधक के मन से हो जाए तो मन के कपाट खुल जाते हैं।।६।। ब्रह्म गुरु की बताई युक्ति से प्रभु भक्ति करके भ्रम व विकार नष्ट हो गए हैं। अब केवल ब्रह्म का ज्ञान ही मन में रह गया है।।७।। शास्त्रों के अनुसार हठ-योग करके अनेक यत्न किए परन्तु मन विकारों से मुक्त न हो सका। न ही प्रभु-प्रेम की उत्पत्ति हुई। इस कारण मैं उदास हूँ परन्तु ब्रह्म गुरु के ब्रह्म ज्ञान से मैंने प्रभु प्राप्त कर लिया है।।८।।१।।

शब्द - 7

हिरण, मछली, भौरा, पतंगा और हाथी सब एक दोष होने पर नष्ट हो जाते हैं। परन्तु मनुष्य में तो पांचों ही इलाज रहित विकार हैं। उस के बचने की कितनी आशा हो सकती है?।।१।। हे प्रभु! मनुष्यत्व ने अज्ञानता से प्रीति लगाई हुई है। अत: इसकी बुद्धि का दीपक धुन्धला पड़ गया है।।१।। रहाउ।। टेढ़ी योनियों (पशु, पक्षी, कीड़े आदि) को विचारहीन होने के कारण पुण्य-पाप की समझ नहीं होती परंतु मनुष्य जीवन तो बड़ा दुर्लभ है परंतु इसकी संगति बुरे विकारों से है।।२।। ऐसे जीव-जन्तु कर्मों के अनुसार आत्मिक मृत्यु मर जाते हैं जिसे कोई रोक नहीं सकता। कर्मों के अनुसार ही अन्य योनियों में जा प्रवेश करते हैं।।३।। हे प्रभु! मैं तेरा दास (गुरु) रविदास विकारों से उपराम आपके उत्तम स्मरण की प्राप्ति के लिए तत्पर हूँ। आप अपने भक्तों के भय दूर करते हो। मुझे भी इस से दूर करके परम आनंद प्रदान करो जी।।४।।१।।

शब्द - 8

हे प्रभु! संतों ने आप के ब्रह्म ज्ञान को समझ लिया है कि संत

तेरा तन हैं व संगत जिन्द जान।।१।। मुझे संतों की संगत, प्रवचनों का आनंद और संतों का प्रेम प्रदान करो जी।।१।। रहाउ।। मुझे संतों का सदाचार, सच्चा मार्ग व संतों की जूठन साफ़ करने की सेवा भाव अति नम्रता प्रदान करो।।२।। एक और दात मांगूं! मुझे भक्ति रूपी मणि प्रदान करो तथा कभी भी पापियों के दर्शन न करवाना।।३।। गुरु रविदास जी प्रवचन करते हैं कि वही बुद्धिमान है जो जानता है कि संतों और प्रभु में कोई अंतर नहीं है।।४।।२।।

शब्द - 9

हे प्रभु! आप गुण भरपूर चंदन हो और हम नम्र अरिंड हैं। हमारा अस्तित्व आप के संग होने के कारण हम नीचे से ऊँचे हो गए हैं भाव हमारे भीतर आपके अच्छे गुण आ गए हैं।।१।। हे प्रभु! मुझे आप की संगत की टेक प्रदान करें, हम अवगुण भरपूर हैं और आप उपकारी हैं।।१।। रहाउ।। आप दूध जैसे सफेद रेशम हो और हम काले (नम्र) पत्थर हैं। परन्तु कृपा करो कि मैं आप की संगत में मधुमक्खियों की भांति प्रेम पूर्वक मिल कर रहूँ।।२।। हे प्रभु! मैं (गुरु रविदास) ने तेरी भक्ति नहीं की, इसलिए मेरा विकारों भरपूर जीवन मूल्यहीन (व्यर्थ) हो गया है।।३।।३।।

शब्द - 10

हे प्रभु! मुझे कोई चिन्ता नहीं चाहे मेरा शरीर टुकड़े-टुकड़े हो जाए। परंतु चिन्ता है कि कहीं मेरे मन में से आप का प्रेम न दूर हो जाए।।१।। मैंने आप के कमल रूपी चरण-भवनों में अमृत पी-पी कर राम नाम रूपी धन को प्राप्त कर लिया है।।१।। रहाउ।। तेरा दास नाम के कारण धन-संपत्ति आदि विकारों में मगन नहीं

होता।।२।। गुरु रविदास जी फरमाते हैं कि हे प्रभु! मैंने आप के नाम की डोर से अपने आप को बांध लिया है। अब मैं इस से मुक्त नहीं हो सकता।।३।।४।।

शब्द - 11

जिन्होंने स्वास-स्वास हरि का स्मरण किया, वह भवसागर से पार हो गए।।१।। रहाउ।। हरि का स्मरण करके (सतगुरु) कबीर जी प्रसिद्ध हुए और उनके जन्मों-जन्मों के लेखे समाप्त हो गए।।१।। (सतगुरु) नाम देव जी ने प्रेम पूर्वक हरि का नाम जपा और हरि को दूध पिलाया। वह जन्म-मरण के संकट में नहीं आए।।२।। प्रभु के सेवक (गुरु) रविदास ने एक हरि को प्राप्त किया और ब्रह्म गुरु की कृपा से नर्कों से मुक्ति पाई।।३।।५।।

शब्द - 12

माटी का पुतला मनुष्य माया को ही देखता है, सुनता है और माया की ही बातें करता भटकता फिरता है।।१।। रहाउ।। जब धन संपत्ति प्राप्त हो जाती है तो हंकारी बन जाता है। माया खो जाने पर दुःखी होता है।।१।। मनुष्य मन, वचन व कार्य करके रसों का लोभी हो गया है। परन्तु जब मृत्यु आ गई तो बुरे स्थान पर आश्रय मिलना है।।२।। गुरु रविदास जी यह बात दृढ़ता से कहते हैं कि संसार एक बाज़ी है और मेरी उस बाज़ीगर (प्रभु) से प्रीत हो गई है।।३।।६।।

शब्द - 13

दूध बछड़े ने, फूल भंवरे ने और पानी मछली ने जूठा कर दिया है।।१।। इसलिए हे प्रभु! मैं आप की पूजा किस वस्तु से

करूं? और पवित्र फूल आदि तो है नहीं।।१।। रहाउ।। चंदन के वृक्षों के साथ सर्प लिपटे हुए हैं। पानी में विष और अमृत एक साथ मिलने पर अपवित्र हैं।।२।। सुगन्ध ले लेने से धूप, दीपक व प्रसाद जूठे हैं और तेरा सेवक तेरी पूजा कैसे करे?।।३।। इसलिए मैं अपना तन और मन प्रभु पूजा के लिए अर्पण करता हूँ और गुरु की कृपा से जब प्रभु को यह चढ़ावा स्वीकार हो गया तब मैं प्रभु को प्राप्त कर सकूंगा।।४।। गुरु रविदास जी फरमाते हैं कि हे प्रभु! यदि आप की पूजा के लिए ये पदार्थ जरूरी होते तो पावन पदार्थ न मिलने के कारण मुझ से तेरी पूजा नहीं हो सकती थी, तब मेरी क्या दशा होती?।।५।।२।।

शब्द - 14

हे प्रभु! जब मेरे में अहम था तब तू नहीं था, अब अहम भाव समाप्त हो गया है तो मुझ में तू ही तू है। जैसे सागर में से उछलती लहरें सागर में ही समा जाती हैं। हे माधो! यह भ्रम ही है कि जिस प्रकार हम मानते हैं, उस प्रकार का होता नहीं है।।१।। रहाउ।। भ्रम के कारण ही राज गद्दी पर सोया हुआ राजा स्वप्न में भिखारी बन कर राज्य से बिछुड़ने का दुःख भोगता है। आप को भूल कर मेरी यही दशा है।।२।। इसी प्रकार जैसे रस्सी से सर्प का भ्रम होता है, अब समझ आ गई है। जैसे स्वर्ण से बना कड़ा सोने से अलग नहीं होता। यह बात अब कहने और सुनने में नहीं आती।।३।। गुरु रविदास का कथन है कि प्रभु एक है और वह अनेक रूप धार कर हर जीव में आत्मिक और पदार्थक आनंद भोग रहा है। वह तो हाथों से भी निकट है और उसकी इच्छा के

अनुसार सब कुछ होता रहता है।।४।।१।।

शब्द – 15

हे प्रभु! आप के नाम का स्मरण करने से मैंने मृत्यु की रस्सी से निकल कर आप को प्रेम की रस्सी से बांध लिया है। अब आप अपने छूटने के लिए कोई यत्न कर लो।।१।। आप मेरे प्रेम को तो जान गए हो। अब आप इससे मुक्त होने के लिए क्या करोगे।।१।। रहाउ।। मछली को पकड़ कर छोटा-छोटा करके काटा, बहुत पकाया, खाने वाले ने चबा-चबा कर खाया, परन्तु फिर भी मछली को अपना मूल पानी न भूला, क्योंकि खाने वाले को प्यास बहुत लगी।।२।। वह प्रभु किसी की पैतृक संपत्ति नहीं। वह तो प्रीति से जकड़ा हुआ है। संपूर्ण संसार मृत्यु की फांसी में फंसा हुआ है, परन्तु प्रभु का सेवक इस संताप से मुक्त है।।३।। गुरु रविदास जी का कथन है कि हे प्रभु! मेरा प्रेम इतना बढ़ गया है कि अपने दुःख किसी और के सम्मुख रखने की आवश्यकता नहीं। परन्तु आप की प्राप्ति के पश्चात भी मैं अपने समाज की दुर्दशा की पीड़ा सहन कर रहा हूँ।।४।।२।।

शब्द – 16

मानव जन्म पिछले अच्छे कर्मों के कारण मिला है परन्तु अज्ञानतावश यह व्यर्थ जा रहा है। राजा इंद्र की भांति हम ने महलों का निर्माण कर लिया, परन्तु प्रभु भक्ति के बिना यह किसी कार्य के नहीं।।१।। हम ने, प्रभु भक्ति के रस का आनंद कभी भोगा ही नहीं, जिस की प्राप्ति से संसार के रस भूल जाते हैं।।१।। रहाउ।। हम जानते हुए भी अज्ञानी, मूर्ख बने हुए हैं और अच्छी-बुरी बातों

में समय बीता जा रहा है। हमारी इन्द्रियां विकारों के प्रति प्रबल हो रही हैं। बुद्धि निर्बल हो रही है। फलस्वरूप हृदय में अच्छी सोच प्रवेश नहीं हो सकती।।२।। हम कहते कुछ हैं और करते कुछ और हैं तथा शक्तिशाली माया को समझने में अस्मर्थ हैं। गुरु रविदास जी फरमाते हैं कि हे प्रभु! मेरी समझ माया से उपराम है। मुझे अपने क्रोध से मुक्त करके मुझ पर कृपा करो।।३।।३।।

शब्द – 17

हे मानव! जिस सुखों के सागर प्रभु के वश में स्वर्ग के पांचों वृक्ष, चिन्तामणि और कामधेनु हैं, उस प्रभु के हाथ की हथेली पर चार पदार्थ, अठारह सिद्धियां और खजाने में नौ कुबेर हैं।।१।। इस लिए तू बाकी थोथी बातों को छोड़ कर प्रभु का स्मरण क्यों नहीं करता?।।१।। रहाउ।। हे पंडित! पुराणों, वेदों आदि की कथाएं और विधियां देवनागरी के चौंतीस अक्षरों में रचा साहित्य केवल वाक्य रचनाएं हैं। वेदों के खोजी वेद व्यास जी ने विचार करके यह परिणाम निकाला है कि यह तो प्रभु के नाम स्मरण के बराबर भी नहीं हैं।।२।। वह बड़े भाग्यशाली हैं जिन की प्रभु नाम स्मरण की लग्न लग गई है। गुरु रविदास जी फरमाते हैं कि उन के मनों में ज्ञान का प्रकाश हो गया है और वे जन्म-मृत्यु के डर से मुक्त हो गए हैं।।३।।४।।

शब्द – 18

हे प्रभु! यदि आप श्रेष्ठ पर्वत हो तो मैं उस श्रेष्ठता को देख कर नाचने वाला मोर हूँ। यदि आप चन्द्रमा हो तो मैं उस शीतल, प्रेम पुंज के प्रकाश का चकोर हूँ।।१।। अतः हे प्रभु! मुझ से

अपनी प्रीति न तोड़ना, मैं तो तोड़ ही नहीं सकता, आप से तोड़ कर मैं और किस के साथ जोड़ूंगा।।१।। रहाउ।। यदि आप प्रकाश देने वाले दीपक हो तो मैं उस की बाती हूँ। यदि आप तीर्थ हैं तो मैं उस का यात्री हूँ।।२।। मैंने आप से पक्की प्रीति जोड़ी है और बाकी सभी विकारों आदि से तोड़ ली है।।३।। मैं जहां भी जाऊँगा, आप की ही प्रशंसा करूँगा। क्योंकि संसार में आप जैसा दूसरा भगवान् या देवता कोई नहीं है।।४।। गुरु रविदास जी फरमाते हैं कि आपकी भक्ति करने से यमों के बंधन से मुक्ति मिलती है। इसलिए मैं आप की प्रशंसा में लीन हूँ।।५।।५।।

शब्द – 19

मनुष्य शरीर जल की दीवार, वायु का स्तम्भ, माता का रक्त, पिता के वीर्य का गारा, मांस और नाड़ियों का पिंजर है जिस में आत्मा रूपी पक्षी निवास करता है। हे प्राणी! संसार में तेरा-मेरा कुछ भी नहीं है। मनुष्य तो वृक्ष से आए एक पक्षी की भांति है जो दिन के उदय होने पर उड़ जाता है।।१।। रहाउ।। तू गहरी नींव खोद कर मज़बूत महल का निर्माण करता है, तेरे सोने के लिए तो केवल साढ़े तीन हाथ स्थान की आवश्यकता है।।२।। केशों को सुंदर बनाता, टेढ़ी पगड़ी बांधता है परन्तु यह तन तो मिट्टी की ढेरी हो जाना है।।३।। ऊंचे भवन व सुंदर नारी में मस्त हुआ पड़ा है, तुमने प्रभु के नाम को भूल कर पूर्ण जीवन का नाश कर लिया है।।४।। गुरु रविदास जी फरमाते हैं कि विकारों के कारण मेरी जाति, पाति और जीवन घटिया बन गया है, इसलिए हे प्रभु! मैं आप की शरण में आ गया हुँ।।५।।६।।

शब्द – 20

मैं चमार, शरीर रूपी जूती को गांठना भाव पदार्थों के साथ प्रीत लगाना नहीं जानता, लोग मुझ से शरीर रूपी जूती गंठवाना चाहते हैं परन्तु मैं केवल प्रभु के साथ जोड़ने का कार्य करता हूँ।।१।। रहाउ।। मेरे पास तीक्ष्ण आर नहीं जिस से मैं टांके लगाऊं। न ही रांपी है जिस से मैं टाकियां लगाऊँ भाव लोगों को ठगूं।।१।। लोग शरीर को पदार्थक लालच से गांठ-गांठ कर दुर्दशाग्रस्त हो रहे हैं परन्तु मैं शरीर को इस प्रकार गांठना त्याग कर ही प्रभु तक पहुंचा हूँ।।२।। गुरु रविदास जी दृढ़ाते हैं कि मैं पदार्थक लालचों को त्याग कर प्रभु स्मरण में मगन हूँ। मेरा यमों के साथ कोई नाता नहीं रहा है।।३।।७।।

शब्द – 21

हे प्रभु! मेरे जैसा कोई नम्र (दरिद्र) नहीं और आप जैसा कोई दयालु नहीं है। अब आप मेरी परीक्षा ना लें। आप के ब्रह्म विचार मेरे मन को भाते हैं, सेवक को पूर्ण ज्ञान प्रदान करो।।१।। हे प्रभु! मैं आप से बलिहार जाता हूँ परन्तु क्या कारण है कि आप मेरे साथ बात नहीं करते।।१।। रहाउ।। गुरु रविदास जी फरमाते हैं कि हे प्रभु! बहुत जन्म हो गए आप से बिछुड़े हुए। यह जन्म मैंने आप के अर्पित कर दिया है। मैं इस आशा से जीवन व्यतीत कर रहा हूँ कि कब आप के दर्शन हों।।२।।१।।

शब्द – 22

हे प्रभु! मेरा मन आपका स्मरण और मेरे नेत्र आप का दर्शन करते रहें। मेरे कान आप के यश वाली बाणी से भरपूर रहें। मेरा

मन भंवरा बना रहे, आप के चरण मेरे हृदय में टिके रहें और मेरी जीभ आप का अमृत रूपी नाम उच्चारती रहे।।१।। मेरी प्रीत प्रभु से कहीं कम न हो जाए क्योंकि यह मैंने बहुत महंगी (अपने जीवन के बदले) ली है। हे प्रभु! मेरी इस प्रीत की रक्षा करना।।१।। रहाउ।। हे प्रभु! यह प्रीत साध-संगत के बिना पैदा नहीं होती। प्रीत के बिना आप की भक्ति नहीं हो सकती। गुरु रविदास जी प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु! मैंने केवल आप से प्रीत पाई है, उस का मान रखना।।२।।२।।

शब्द - 23

गुरु रविदास प्रचलित आरती के स्थान पर अपनी नई आरती मनुष्यत्व को प्रदान करते हुए उच्चारण करते हैं कि हे हरि प्रभु! मेरे लिए आप के नाम का स्मरण ही आरती है और स्मरण ही तीर्थों का स्नान है। इस के बिना सब झूठ का पसारा और लोक दिखावा है।।१।। रहाउ।। मेरे लिए आप का नाम ही आसन, चन्दन पीसने का पत्थर और नाम ही केसर के छींटे देना है। आप के नाम का जाप ही मेरे लिए जल व चन्दन है और मैं नाम रूपी जल और चंदन घिसा कर आप को चढ़ाता हूँ।।१।। आप के नाम का जाप दीपक, बाती और उस में डाला गया तेल है। इस प्रकार मैंने आप के नाम की ही ज्योति जगा रखी है जिस से पूर्ण ब्रह्मांड में प्रकाश हो गया है।।२।। आप का नाम ही धागा और फूलों की माला है। इस के मुकाबले में सारी वनस्पति के अठारह भार जूठे हैं। हे प्रभु! अगर मैं आप द्वारा ही उत्पन्न की समग्री आप को ही भेंट करता हूँ तो मैंने अपने पास से क्या अपर्ण किया? इस लिए मैं आप को

आप के नाम का ही चंवर झुलाता हूँ।।३।। सम्पूर्ण संसार अठारह पुराणों, अठासट तीर्थों के स्नान को पुण्य कर्म समझ कर चार प्रकार की योनियों में भटक रहा है। परंतु गुरु रविदास जी दृढ़ करते हैं कि हे प्रभु! मेरे लिए आपका नाम स्मरण ही सच्ची आरती है और मैं सत्यनाम का ही आपको भोग लगाता हूँ।।४।।३।।

शब्द - 24

हे प्रभु! मैं अज्ञानी हूँ क्योंकि मेरा मन माया के हाथों बिका हुआ है।।१।। रहाउ।। आप जगत के स्वामी कहे जाते हो और हम कलियुगी विषयी जीव हैं।।१।। काम आदि इन पांच विकारों ने मेरा मन विकृत कर दिया है जो हर क्षण मुझे आप से दूर कर रहे हैं।।२।। जिस ओर भी देखता हूँ सब लोकाई दु:खी है फिर भी मुझे विश्वास नहीं हो रहा चाहे वेद शास्त्रों की साखियाँ इस की साक्षी भरती हैं।।३।। इन विकारों में फंस कर इन्द्र ने गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या के साथ व्यभिचार किया, गौतम के श्राप से इन्द्र के तन पर सहस्त्रों भग (स्त्री के गुप्त अंग) फूट पड़े। भगवान ब्रह्मा कामवश अपनी ही पुत्री पर मोहित हुआ तो भगवान शिव ने क्रोध में उसका शीश काट दिया।।४।। चाहे ऊपर लिखित वर्णन से देवों आदि के विकारों से दुर्दशाग्रस्त होने का पता चल गया है कि दुष्ट विकार जीव को अति क्रोधित हो कर मारते हैं परंतु फिर भी मेरा मन निर्लज है कि यह अब भी हार नहीं मानता।।५।। गुरु रविदास जी का कथन है कि इन विकारों से मुक्ति पाने के लिए क्या करूँ, कहां जाऊँ? फिर आप ही उत्तर देते हैं कि एक ब्रह्म गुरु भाव प्रभु के बिना किसी और की शरण नहीं ली जा सकती।।६।।१।।

शब्द - 25

साधक रूपी स्त्री ही अपने पति पर परमात्मा की प्रतिष्ठा जानती है जो हंकार को छोड़ कर सुख का आनंद लेती है। वह अपना सर्वस्व अर्पण कर देती है और प्रभु के बिना किसी और का सहारा नहीं लेती।।१।। जिन्होंने प्रभु से प्रीत नहीं की वह उस की प्रीत के बिछुड़ने की पीड़ा कैसे जान सकती हैं?।।१।। रहाउ।। जिन्होंने प्रभु से प्रेम नहीं किया, भक्ति नहीं की? वह लोक-परलोक में दुःखी होते हैं। उन को पुरसलात का कठिन मार्ग बिना साथी के पार करना पड़ता है।।२।। मैं दुःखी और दर्दमंद (पीड़ित) आपके दर पर आया हूँ। आप के दर्शनों की तीव्र इच्छा है परंतु आप की ओर से कोई उत्तर नहीं मिल रहा। गुरु रविदास जी कथन करते हैं कि हे प्रभु! मैं आप की शरण में हूँ, आप जिस प्रकार चाहें वैसे ही मुझे मुक्ति प्रदान करें।।३।।१।।

शब्द - 26

जैसे दिवस उदय होता और अस्त हो जाता है इसी प्रकार जीव जन्म लेता और मृत हो जाता है। सब ने प्रस्थान कर जाना है, किसी ने भी स्थिर नहीं रहना। संगी-साथी जा रहे हैं, पथ भी दूर का है परंतु मृत्यु शीश पर आ खड़ी हुई है।।१।। हे मूर्ख मनुष्य! तूने अज्ञानता की नींद सोया अपने जीवन व जगत को सत्य मान लिया है।।१।। रहाउ।। तू अन्न (भोजन) के लिए प्रभु को भुला बैठा है परंतु हे भाई! प्रभु ने जिस भी जीव को जन्म दिया है उस के लिए भोजन के भंडार भी रखे हुए हैं। भोजन का प्रबंध प्रभु हर जीव में बैठा स्वयं करता है। हे जीव! हंकार त्याग कर प्रभु की अराधना

कर और अपनी प्रातः को संभाल ले।।२।। तेरा जीवन समाप्त होता जा रहा है परंतु तूने अपना भविष्य मार्ग संवारा नहीं है। वृद्ध अवस्था का सायं काल होने पर चारों ओर अंधेर छा जाएगा। गुरु रविदास जी दृढ़ करते हैं कि हे अज्ञानी! तू प्रभु का स्मरण क्यों नहीं करता? यह संसार तो नाश हो जाएगा।।३।।२।।

शब्द - 27

हे मनुष्य! तू अपने जीवन के वास्तविक उद्देश्य को भूल कर ऊँचे महल और बढ़िया रसोई बना कर घमण्ड करता है। अंत समय इन में तुझे एक घड़ी भी रहना नहीं मिलेगा।।१।। यह तन तो सूखे घास की ढेरी जैसा है जो आग लगने से पलों में ही राख हो कर मिट्टी में मिल जाता है।।१।। रहाउ।। मरने के उपरांत सब संबंधी तुझे घर से शीघ्र से अति शीघ्र निकालने के लिए कहेंगे।।२।। यहां तक कि सदैव साथ रहने वाली तेरी पत्नी भी तुझे मर गया, मर गया कह कर दूर हो जाती है।।३।। गुरु रविदास जी कहते हैं कि सब जगत मोह-माया से ठगा जा रहा है। परंतु मैं तो एक प्रभु की आराधना करके बच गया हूँ।।४।।३।।

शब्द - 28

मेरी निर्धनता को देखकर सब हँसते थे, परंतु हे प्रभु! आप की कृपा से मेरी हथेली पर अठारह सिद्धियां हैं भाव प्रत्येक सौगात है।।२।। हे मुक्तिदाता! आप जानते हैं कि मैं कुछ भी नहीं हूं। परंतु जैसे आप ने मुझ पर कृपा की है और जो भी आपकी शरण आते हैं उन पर आप कृपा करते हैं।।१।। रहाउ।। जो केवल आपकी शरण आते हैं उन को पापों का भार नहीं लगता। आपकी शरण

आए अच्छे-बुरे सब जीव भवसागर से पार हो जाते हैं।।२।। गुरु रविदास जी प्रवचन कहते हैं कि हे प्रभु! आप की कृपाएं वर्णित नहीं हो सकतीं। बस! यही कहा जा सकता है कि आप जैसे केवल आप ही हो, आपकी उपमा किसी और के साथ नहीं हो सकती।।३।।१।।

शब्द - 29

जिस कुल में भक्त पैदा होते हैं वह ऊँची-नीची जात, धनवान-निर्धन करके नहीं अपितु पवित्र कार्य करके संसार में शोभा पाते हैं।।१।। रहाउ।। चाहे कोई ब्राह्मण, वैश्य, शूद्र, क्षत्रीय, मरासी, चंडाल या मलीन मन वाला हो, वह प्रभु की आराधना करके पवित्र हो जाता है और अपने ददयाल, ननिहाल दोनों कुलों का उद्धार करता है।।२।। वह गांव, स्थान, परिवार पूर्ण जगत में धन्य होते हैं जहां प्रभु का भक्त जन्म लेता है और उस ने प्रभु-प्रेम का अृमत पीकर बाकी स्वाद त्याग कर विकारों का नाश किया।।२।। बड़ा विद्वान, वीर, चक्रवर्ती राजा या कोई और मनुष्य प्रभु के भगत के बराबर नहीं है। गुरु रविदास जी का कथन है कि जैसे चौपत्ती जल के ही निकट रह सकती है, उसी प्रकार प्रभु-भक्त अद्‌भुत हैं जो प्रभु चरणों में ही जीवत रह सकते हैं।।३।।२।।

शब्द - 30

हे संसार के लोगो! हर पल मुक्ति देने वाले प्रभु का नाम जपो। इस के बिना यह तन व्यर्थ चला जाता है। वही प्रभु मुक्ति का दाता और हमारा माता-पिता है।।१।। जो मनुष्य जीवन में प्रभु से जुड़ा रहता है और मरते समय भी उसकी सुरति (चेतना) प्रभु

से जुड़ी रहती है, वह प्रभु को प्राप्त होता है।।१।। रहाउ।। प्रभु के नाम का जाप प्राणों का आसरा है, जिस से ललाट पर से आभानूर टपकने लग पड़ता है। नाम का जाप सेवक को वैरागी बना देता है जिस से आत्मिक शक्ति रूपी धन मिल जाता है।।२।। यदि प्रभु ही हम पर उपकारी हो जाता है तो फिर संसार हमारा क्या बिगाड़ सकता है? मुझे आपके चरणों में स्थान मिला है, आप ही युगों-युगों से अपने सेवकों को पार उतारते हो।।३।। आपके स्मरण से मेरे मन में ज्ञान का प्रकाश हो गया है, आप ने कृपा करके मुझे अपना सेवक बना लिया है। गुरु रविदास जी फरमाते हैं कि मेरी अब तृष्णा समाप्त हो गई है। अब मैं उस के स्मरण में मगन हूँ।।४।।१।।

शब्द - 31

यदि निंदक चाहे अठासठ तीर्थों का स्नान कर ले, बारह शिवलिंगों की पूजा करे, लोक सेवा के लिए कूएं व तालाब लगवा कर दे, यदि वह सच्चे संतों की निंदा करता है तो यह सेवा व्यर्थ चली जाती है।।१।। सच्चे संतों की निंदा करने वाला पार नहीं हो सकता। उसके शीश पर नर्कों का बोझा पड़ता है।।१।। रहाउ।। यदि वह सूर्य ग्रहण के अवसर पर कुरुक्षेत्र जाकर स्नान करे। पत्नी हार-शिंगार करके दान करे। सताईस स्मृतियां अपने कानों से सुने परंतु यदि वह संतों की निंदा करता है तो इस का कोई लाभ नहीं होता।।१।। यदि वह देवताओं को प्रसाद का भोग लगाए, भूमि दान करे, मंदिर दान करके प्रशंशा ले और अपना कार्य बिगाड़ कर दूसरों का संवारे परंतु फिर भी यदि संतों की निंदा करता है तो वह

योनियों में भटकता है।।३।। हे संसार के लोगो! तुम निंदा क्यों करते हो। निंदक का पता लग ही जाता है। गुरु रविदास जी आज्ञा करते हैं कि बहुत सोच-विचार करके यही निर्णय पक्का होता है कि निंदक सदैव नर्कों में पड़ता है अर्थात् मुक्त नहीं होता।।४।।२।।

शब्द - 32

प्रभु का नाम पढ़ा भी जाता है, श्रवण भी किया जाता है और विचारा भी जाता है परंतु फिर भी उस प्रभु के दर्शन नहीं होते। दर्शन हों भी कैसे क्योंकि जब तक लोहा पारस (स्पर्श मणि) से छू न जाए वह स्वर्ण नहीं बन सकता।।१।। हे प्रभु! मेरी शंकाओं का भेद नहीं खुलता। काम, क्रोध, मोह, ईर्ष्या और अंहकार आदि दोषों ने विनाश कर दिया है।।१।। रहाउ।। घमण्ड में हम कहते हैं कि हम बहुत बड़े कवि, ऊँची कुल वाले, योगी और संन्यासी हैं। ज्ञानी, गुणवान, शूरवीर व दानी हैं। यह बुरी सोच हम में से नष्ट नहीं होती।।२।। गुरु रविदास जी के पवित्र बचन हैं कि सब लोग समझ नहीं रहे और पागलों की भांति भूले हुए हैं। परंतु मुझे तो प्रभु के नाम का सहारा है जो मेरे जीवन का प्राण आधार और धन संपत्ति है।।३।।१।।

शब्द - 33

हे प्रभु! ऐसी कृपा आप के अतिरिक्त और कौन कर सकता है। निर्धनों को प्रतिष्ठा देने वाले प्रभु ने स्वयं मेरे शीश पर छत्र झुला कर मुझे प्रतिष्ठा प्रदान की है।।१।। रहाउ।। जिस स्पर्श (अछूतों की) से जगत को घृणा हो जाती है, उन पर भी आप मुग्ध हो जाते हो। निम्नों को ऊँची पदवी देते समय आप किसी से

भय नहीं खाते और आप का स्मरण करने वालों को भी आप भयरहित बना देते हो।।१।। सर्व गुरु नामदेव, कबीर, त्रिलोचन, सधना, सैन आप की कृपा से ऊँचे हो गए (प्रभु आराधना की प्रदानता से ऊँचे और निर्भय होकर संसार को क्रांतिकारी परिवर्तन प्रदान किए)। गुरु रविदास जी उच्चारते हैं कि संत जनों सुनो! वह प्रभु सब कुछ करने के समर्थ है।।२।।१।।

शब्द - 34

यह शब्द कुछ परिवर्तनों के साथ दूसरी बार आया है। पहला शब्द राग सोरिठ में है और यह दूसरा शब्द राग मारू में है। राग सोरिठ प्रेम का राग और राग मारू युद्ध का राग है। राग सोरिठ में गुरु जी प्रेम के साथ समझाते हैं तथा मारू में गुरु जी कठोरता के साथ दृढ़ता प्रदान करते हैं। अत: इन तब्दीलियों के चलते इस शब्द की व्याख्या शब्द नं. 17 कृप्या पृष्ठ 57 पर पढ़ें।

शब्द - 35

यदि कोई ऊँची कुल वाला ब्राह्मण छ: कर्म करे परंतु उस के हृदय में प्रेम नहीं है और न ही उस को प्रभु की कथा भाती है तो वह चंडाल समान है।।१।। हे मेरे निष्क्रिय मन! तू जागते-सोते प्रभु को स्मरण कर। तू महां-ऋषि वाल्मीक की ओर क्यों नहीं देखता? वह साधारण कुल के होते हुए भी प्रभु भक्ति करके अमर पद को प्राप्त हुए।।१।। रहाउ।। नीच कहा जाने वाला, सुयान सत्र प्रभु से प्रेम लगाता था। लोग उस की प्रशंसा क्या कर सकते हैं। उस की स्तुति तो तीन लोकों में हो रही है।।२।। बुरी बृद्धि वाले अजामल (पापी), पिंगला (वैश्या), लुभत (शिकारी), कुंचर

(गजराज हाथी) आदि प्रभु स्मरण द्वारा मुक्त हो गए तो हे (गुरु) रविदास, तू क्यों नहीं पार हो सकेगा?।।३।।१।।

शब्द - 36

प्रभु दृष्टिगोचर नहीं होता। अत: उस को प्राप्त करने की आशा नहीं बनती। वास्तविक्ता यह भी है कि दृष्टव्या प्रत्येक वस्तु नाशवान है। परंतु प्रभु अविनाशी है। जो पूरी सूझ के साथ प्रभु का जाप करता है, वही योगी (भक्त) नि:स्वार्थ होता है।।१।। जब साधक प्रभु का सिमरण करता है तो जैसे लोहा पारस से स्पर्श होते ही स्वर्ण बन जाता है, उसी प्रकार साधक प्रभु की स्पर्शता प्राप्त करते ही कष्टों, इच्छाओं, विकारों से मुक्त प्रभु रूप ही हो जाता है।।१।। रहाउ।। वही मुनि है जो मन के कष्टों को मिटा कर इच्छाओं को वश में कर लेता है और सृष्टि में व्यापक प्रभु से एक जुट हो जाता है। दुनिया मन के विकारों, इच्छाओं के पीछे दु:खी हुई तड़प रही है, परंतु जो प्रभु को स्मरण करता है, प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करके उस का ही रूप हो जाता है।।२।। फल की प्राप्ति के कारण पहले फूल खिलते हैं, जब फल बन जाते हैं तो फूल झड़ जाते हैं, इसी प्रकार साधक इच्छाओं, विकारों का नाश करने के लिए ज्ञान का अभ्यास करता है। जब प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त हो जाता है तो विकारों और इच्छाओं का नाश हो जाता है।।३।। इस प्रकार बुद्धिमान स्त्री घी की प्राप्ति के लिए दही का मंथन करती है। जब घृत बन जाता है तो मंथन बंद कर देती है। अभ्यास के पश्चात् साधक दोषों और इच्छाओं को वश में कर लेता है और ब्रह्मज्ञान प्राप्त करता है। यही ज्ञान मुक्ति की पदवी की प्राप्ति प्रदान करता

है। इस लिए गुरु रविदास जी अपने आप से कह रहे हैं कि हे अभागे! तू इस परम वैराग्य की प्राप्ति के लिए प्रभु का स्मरण क्यों नहीं करता?।।४।।१।।

शब्द - 37

हे मेरी काया! तुझे यह ज्ञान नहीं कि तूं बनावटी सजावट देख कर अकड़ती फिरती है। यहां घमण्डी के लिए कोई स्थान नहीं, तेरे शीश पर काल चक्र चल रहा है।।१।। हे बावरी काया! तूं घमंड क्यों करती है? तूं तो भाद्र माह में उत्पन्न हुई खुम्भ की भांति शीघ्र नाश होने वाली है।।१।।रहाउ।। हिरन को यह भेद नहीं कि वह सुगंधि उस की नाभि में से आ रही है जिसे वह बाहर ढूंढता फिरता है। जो मनुष्य इस बात का विचार करता है कि प्रभु ने हृदय के भीतर से ही मिलना है, वह यमदूतों की दुर्दशा से बच जाता है।।२।। तूं अपने पुत्रों और पत्नी का हंकार करता प्रभु को भूले हुए है परंतु प्रभु ने तो किए कार्यों का लेखा मांगना ही है। मृत होने के पश्चात् संबंधियों ने साथ नहीं जाना फिर किस को प्रिय-प्रिय कह कर पुकारेगा।।३।। जो पुरुष सच्चे साधु की शरण लेता है उस के सारे पाप मिट जाते हैं। गुरु रविदास जी के पावन बचन हैं कि जो पारब्रह्म प्रभु का स्मरण करते हैं उन का दुष्ट स्वभाव मिट जाता है और उन के जन्म-मरण का चक्र समाप्त हो जाता है और वह योनियों में नहीं पड़ते।।४।।१।।

शब्द - 38

हे नगर के ब्राह्मण जनों! मेरी जाति चमार करके प्रसिद्ध है जिस से मुझे तुम्हारी ओर से प्रभु स्मरण का अधिकार नहीं। परंतु

मेरे हृदय में प्रभु के गुणों का वास हो गया है।।१।। रहाउ।। शराब चाहे गंगा जल से बनाई गई हो तो भी संतजन उसे पीते नहीं। इस के विपरीत यदि शराब गंगा में मिल जाए तो वह शराब नहीं रहती अपितु गंगा जल ही बन जाती है।।१।। ताड़ी के वृक्ष से शराब बनने से उसे व उस से बने कागज़ को अपवित्र माना जाता है। परंतु जब उस कागज़ पर प्रभु की भक्ति, उपमा लिख दी जाती है तो उसे नमस्कार करके पूजा जाता है।।२।। हिन्दु धर्म अनुसार मेरी जाति चमड़े को काटना, छीलना और मृत पशु बनारस के आस-पास प्रति दिन ढोना है। परंतु फिर भी मुझे, प्रभु के दासों के दास रविदास को, बिपरों के प्रधान धरती पर उपमा होकर प्रणाम करते हैं।।३।।१।।

शब्द - 39

जो साधक प्रभु का स्मरण करके उस को पा लेता है उस के सामान्य न तो पदमापति भाव विष्णु, न कवलासपति भाव शिव और आनकोउ भाव ब्रह्मा भी नहीं है। पारब्रह्म केवल और केवल एक है और वह अनेक रूप धार कर सृष्टि के कण-कण में समाया हुआ है।।१।। (गुरु) नामदेव जी छीपा जाति के थे। उन्होंने एक प्रभु की स्तुति लिखी, किसी अन्य की पूजा नहीं की। वेदों का ज्ञाता महाऋषि व्यास शूद्र थे और सनक आदि जिन का गुरु शूद्र था, के ग्रंथों में लिखित है कि नाम के स्मरण की महिमा संसार में प्रसिद्ध है।।१।। रहाउ।। जिस (गुरु) कबीर के पूर्वज ईद व बकरीद के दिन गऊओं की बली देते थे और शेखों, शहीदों और पीरों की मान्यता करते थे, उस (गुरु) कबीर के पिता ने भी उसी प्रकार ही

किया परंतु उन के पुत्र (गुरु) कबीर से ऐसा नहीं हो सका (भाव उन्होंने केवल प्रभु का स्मरण ही किया, यह कर्म नहीं किये)। इस नाम स्मरण करके वह संसार में प्रसिद्ध हुए।।२।। जिस की कुल के चमार आज तक बनारस के आस-पास मृत पशु ढोहते फिर रहे हैं, हे प्रभु! तेरे स्मरण के कारण उस कुटुंब में से तेरे दासों के दास (गुरु) रविदास को ब्राह्मण धरती पर दंडवत होकर नमस्कार करते हैं।।३।।२।।

शब्द - 40

गुरु जी के पावन वचन हैं कि प्रभु कौन सी भक्ति करने से मिलता है? फिर अपनी परीक्षा विधि का सारांश कहते हैं कि मुझे तो साध संगत में विचरने से प्रभु प्राप्ति हुई है।।१।। रहाउ।। साध संगत के बिना मेरा मैला अंत:करण पवित्र कैसे होता? कब तक मैं अज्ञानतावश सोया रहता?।।१।। दुष्कर्मों में पड़ कर जो पाप जोड़े थे, साध संगत में जाकर समाप्त कर दिए हैं। जिस हृदय में पापों की दुकान डाली थी, उस का अब नाश हो गया है।।२।। गुरु रविदास जी पावन शब्द उच्चारते हैं कि प्रभु-प्राप्ति के पश्चात् जब पहले किए कर्मों की पड़ताल हुई तो जो-जो मैंने किया था, प्रत्यक्ष दिखाई दिया।।३।।३।।

सलोक

अपने असल तत्व पारब्रह्म-प्रभु को छोड़ कर जो पुरुष किसी और (देवी, देवता आदि) से मुक्ति की आशा रखता है, गुरु रविदास जी पूर्ण सत्य वर्णन करते हैं कि ऐसे जीव नर्कों को प्राप्त होंगे भाव मुक्त नहीं होंगे।।२४२।।

संस्था के कार्य

श्री गुरु रविदास मिशन प्रचार संस्था पूर्ण रूप से धार्मिक संस्था है। इस के सभी सदस्य अपने कठोर परिश्रम, आप में से और आप सब साध संगत के सहयोग से ही प्रयत्न कर रहे हैं। संस्था की ओर से प्रत्येक वर्ष गुरु जी के प्रगट दिवस पर एक पुस्तिका 9-10 हज़ार की गिनती में छपवा कर निःशुल्क बांटी जाती है। इसके इलावा भिन्न-भिन्न धार्मिक समागमों पर जाकर प्रचार किया जाता है। बच्चों की श्रेणियां लगा कर उन को गुरु जी के मिशन की शिक्षा दी जाती है तांकि आने वाली पीढ़ियां गुरु सिद्धांतों, अपने इतिहास और सभ्याचार से ज्ञानवान हो सकें। इन बच्चों को नशों और दूसरी बुरी आदतों से दूर रहने वाला, अच्छी पढ़ाई, कौम की सेवा भावना, आर्थिक स्तर मजबूत करने, कर्म-कांडों, वहमों-भ्रमों और अंध-विश्वासों से रहित विज्ञानमय और भाईचारा भरपूर गुरु बाबा जी की विचारधारा वाला जीवन जीने की प्रेरणा दी जाती है। गुरु जी की चरण छोड़ नगरी खुरालगढ़ साहिब (होशियारपुर पंजाब) में प्रत्येक वर्ष वैशाखी पर्व के समागम पर संस्था की ओर से निःशुल्क मैडीकल फस्टएड कैंप लगाया जाता है। इसी तरह गांव-गांव जाकर रात्रि के कीर्तन समागम निःशुल्क किए जाते हैं। कौम के धार्मिक समागमों पर निःशुल्क और लागत मात्र मूल्य वाली पुस्तकों का स्टाल लगाया जाता है। संस्था की योजना है कि नगर-नगर जाकर केडर कैंप लगाए जाएं तांकि श्री गुरु रविदास मिशन के प्रचारक तैयार किए जा सकें। उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए संस्था आप से तन, मन, धन से सहयोग की मांग करती है।